मासिक

गुरमत ज्ञान

ISSN 2394-8485

३/-

चैत्र-वैशाख संवत् नानकशाही ५५८ अप्रैल 2026 वर्ष १९ अंक ८

खालसा पंथ का सृजन स्थान

तख़्त श्री केसगढ़ साहिब, श्री अनंदपुर साहिब (रूपनगर)

गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री गुरु अंगद देव जी,
गाँव मत्ते दी सरां (सराय नागा), ज़िला श्री मुकतसर साहिब

गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री गुरु अमरदास जी,
गाँव बासरके गिल्लां, ज़िला श्री अमृतसर साहिब

गुरुद्वारा जन्म-स्थान भक्त धन्ना जी,
गाँव धुआं कलां, ज़िला टोंक, राजस्थान

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

चैत्र–वैशाख संवत् नानकशाही 558

वर्ष 19 अंक 8 अप्रैल 2026

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
सेवा के अनन्य प्रतिरूप : श्री गुरु अंगद देव जी 7
–डॉ. मनजीत कौर
श्री गुरु अमरदास जी 12
–डॉ. कशमीर सिंघ नूर
श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन का आध्यात्मिक पक्ष 16
–स. परमजीत सिंघ 'सुचिंतन'
सहज भक्ति के नायक : भक्त धन्ना जी 21
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
'ख़ालसा' 26
–भाई वीर सिंघ (दिवंगत)
सच्चाई पर रखो भरोसा (कविता) 27
–श्री प्रशांत अग्रवाल
बैसाखी से खालसा-सृजना दिवस 28
–डॉ. गुरमीत सिंघ
आदर्श मानव की सृजना का स्वरूप : खालसा पंथ 33
–सतविंदर सिंघ फूलपुर
.... गुरुद्वारा श्री नानकमता साहिब 36
–डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल
'सलोक सहसक्रिती' के बारे में विचार 43
–ज्ञानी मोहन सिंघ उरलाना
ख़बरनामा 48

गुरबाणी विचार

वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम बिछोहु ॥
हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु ॥
पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु ॥
पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ॥
इकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि ॥
दयु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु अवरु न कोइ ॥
प्रीतम चरणी जो लगे तिन की निरमल सोइ ॥
नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ ॥
वैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ ॥३ ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३३)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी बारह माहा मांझ बाणी की इस पावन पउड़ी में बैसाख मास के वातावरण एवं मौसम तथा इसमें की जाने वाली क्रियाओं की सांकेतिक पृष्ठभूमि में मनुष्य-जीवन रूपी इस कालखंड को प्रभु-नाम-सुमिरन द्वारा उपयोग में लाने तथा सफल करने का गुरमति मार्ग बख्शिश करते हैं।

गुरु जी फरमान करते हैं कि बैसाख मास में भले ही जनसाधारण की ख्वाहिशें-उमंगें फलीभूत होती हों परंतु इस मास में भी उन जीव-स्त्रियों का हृदय धैर्य धारण नहीं कर सकता जो कि प्रभु-भक्ति अथवा प्रभु-प्रेम से दूर हैं। परमात्मा ही आत्मा का मित्र है और अज्ञानतावश इसी एकमात्र मित्र को भुला देने से धैर्य प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसके विपरीत जीव को सांसारिक माया ने अपनी तरफ आकर्षित कर रखा है।

सतिगुरु जी कथन करते हैं कि न पुत्र, न स्त्री (पत्नी) और न धन ही मनुष्य का साथ देता है, साथ देने वाला तो सदैव स्थिर प्रभु ही है। दुखदायक स्थिति यह है कि कुछ एक चुनिंदा गुरमुखों को छोड़कर समस्त संसार मोह या सांसारिक लगाव के चक्कर में खचित होकर आत्मिक मृत्यु को प्राप्त हो रहा है। ऐसा संसार इस रहस्य को समझता नहीं कि मात्र प्रभु-नाम ही जीवन में काम आता है, शेष सांसारिक कार्य यहीं रह जाते हैं अर्थात् वे आत्मिक जीवन का अंग नहीं बन पाते। प्रेम-स्वरूप प्रभु को भुलाकर सब कुछ बर्बाद होना निश्चित है, क्योंकि उसके बिना कुछ भी स्थिर रहने वाला नहीं है।

पंचम पातशाह चुनिंदा गुरमुखजनों की स्थिति दर्शाते हुए कथन करते हैं कि जो जन प्यारे प्रभु के चरणों के साथ जुड़ गए हैं अथवा उसकी प्रेमा-भक्ति में रत हो गए हैं, उनकी शोभा निर्मल है। विनती है कि हे प्रभु! हमें अपने साथ मिला लो! बैसाख रूपी जीवन-खंड सुहावना तभी है जब पूर्ण संत अथवा सतिगुरु के साथ भेंट हो जाए और वह प्रभु-मिलाप का सबब बना दे।

संपादकीय

आओ, एकता-इत्तफ़ाक का माहौल सृजित करें!

'ख़ालसा' प्रकट होने की अलौकिक घटना, विश्व-इतिहास की एक इंकलाबी घटना है, जिसकी लोक-कल्याण के पक्ष से महत्ता, जाने-अनजाने में अब तक नज़रअंदाज़ होती रही है। इस ऐतिहासिक घटना के पीछे कार्यशील भावना तथा मिशन को समझने की ज़रूरत है। दूरंदेशी के साथ लंबे समय के लिए किसी सार्थक व रचनात्मिक कार्यक्रम की आवश्यकता है। दलबंदी (गुटबाजी) और आपसी खींचतान से ऊपर उठ कर ही पंथप्रसत लोगों के हृदय में उमंग और उत्साह पैदा होगा। यदि पंथक कहलवाने वालों के मन में पंथ के प्रति दर्द होगा, तभी अपने निजी स्वार्थों से ऊपर उठ कर पंथ-हित के लिए कार्य किये जा सकते हैं। जिन्हें पंथ की अपेक्षा अपने दल प्यारे हैं, उन्हें चौथे पातशाह के इस फ़रमान से शिक्षा लेनी चाहिए :

किस ही धड़ा कीआ मित्र सुत नालि भाई॥
किस ही धड़ा कीआ कुड़म सके नालि जवाई॥
किस ही धड़ा कीआ सिकदार चउधरी नालि आपणै सुआई॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३६६)*

किसी ने अपने मित्र, पुत्र या भाई के साथ धड़ा (दल) बनाया है, किसी ने अपने समधी के साथ और किसी ने अपने जमाई के साथ धड़ा बनाया है। किसी ने अपने स्वार्थ हेतु सरदार (नेता) या चौधरी के साथ धड़ा बनाया है। गुरु जी बताते हैं कि ये सभी धड़े माया के मोह का पसार हैं। गँवार और मूर्ख लोग माया के कारण लड़ते-झगड़ते हैं, और कोई बात नहीं :

एह सभि धड़े माइआ मोह पसारी॥
माइआ कउ लूझहि गावारी॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३६६)*

जिनके संग धड़े बनाए जाते हैं, वे आखिर में छोड़ जाते हैं, चले जाते हैं, इसलिए इन धड़ों का आश्रय बेकार है। झूठे धड़ों के कारण बाद में पछताना पड़ता है :

जिन्ह सिउ धड़े करहि से जाहि॥
झूठु धड़े करि पछोताहि॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३६६)*

श्री गुरु रामदास साहिब जी दिशा-निर्देश देते हुए इसी शब्द के 'रहाउ' वाले बंद में फरमान करते हैं कि मैंने अपना धड़ा अकाल पुरख, वाहिगुरु के साथ बनाया हुआ है। वही मेरी टेक है, मेरा आधार है। सर्वशक्तिशाली वाहिगुरु के बिना, मेरा अन्य कोई पक्ष या धड़ा नहीं है और मैं वाहिगुरु के असंख्य गुणों की उपमा गायन करता हूं, किसी नश्वर नेता या चौधरी का गुणगान नहीं करता :

हम हरि सिउ धड़ा कीआ मेरी हरि टेक॥
मै हरि बिनु पखु धड़ा अवरु न कोई

हउ हरि गुण गावा असंख अनेक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३६६)*

इस प्रकार गुरु जी, परमात्मा के पक्ष वाले धर्म-धड़े के साथ जुड़ने का संदेश देते हैं, जिसके बल द्वारा सारे संसार पर विजय प्राप्त की जा सकती है :

जन नानक का हरि धड़ा धरमु सभ स्रिसटि जिणि आवै ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३६६)*

किसी भी कौम-समाज-जत्थेबन्दी की उन्नति के लिए तीन बातें लाज़िमी होती हैं— एकता, इख़लाक और मर्यादा। इन तीनों में से एक की कमी भी अवनति का कारण बनती है। हम अपने इष्ट, अकाल पुरख को उक्त तीनों ही बातों का मुजस्समा मानते हैं, उसके समूचे नज़ारों में से एकता और रूहानी मर्यादा के दर्शन भी करते हैं, जबकि अपने निजी और सामाजिक जीवन में एकता, इख़लाक एवं मर्यादा को निकट नहीं फटकने देते। "आगाहा कू त्राघि" के आशयानुसार हम अपने आचार, व्यवहार और किरदार को ईश्वरीय रजा के अनुकूल ढाल नहीं सके। हमारा गुणीनिधान इष्ट हमारा आदर्श नहीं बन सका। अगर हमारा इष्ट एक है तो हम सबकी विचारधारा भी एक होनी चाहिए। अगर ऐसा हो तो गुटबाजी का सवाल ही पैदा नहीं होता। बेशक कथनी द्वारा हम एक अकाल पुरख के पैरोकार होने का दावा करते हैं मगर किरदार पक्ष से हमारे 'आदर्श' कुछ और हैं। हमारे निशाने, हमारे उद्देश्य अलग-अलग हैं। हमारी अलग-अलग विचारधारा दरसाती है कि जैसे हमारा इष्ट एक नहीं है। कहने से तात्पर्य, पंथक स्तर पर एक सोच, एक विचारधारा की कमी को दूर करने के लिए आवश्यक है कि हम सच्चे मन से एक अकाल पुरख को अपना आदर्श, अपना इष्ट मानें और अपने किरदार के माध्यम से साबित कर दें कि हम एक वाहिगुरु के बिना अन्य किसी के पुजारी नहीं।

आज हम इतिहास के एक अहम मोड़ पर खड़े हैं। एक तरफ़, हम तेज रफ़्तार के साथ विकास की बुलंदियों को छू रहे है और संसार को अति आधुनिक युग में प्रवेश होता देख रहे हैं, जबकि दूसरी तरफ़ हम बिखरे हुए हैं, हमारी शक्ति खंड-खंड हो रही है।'खालसा सृजना दिवस' (बैसाखी) मनाते हुए भी अगर हमने पतनोन्मुखी विचारधारा से पीछा न छुड़ाया तो हमारी आने वाली पीढ़ी, आज के इतिहास के पन्नों को किस नज़र के साथ देखेगी, यह ज्यादा बताने की ज़रूरत नहीं। आओ! अपने मन में पंथक-प्रेम के दीप जलाएं और हर तरह के गिले-शिकवे भुला कर, पंथक एकता के लिए दलबंदी वाली विचारधारा से किनारा करें :

होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११८५)*

'खालसा सृजना दिवस' के महान, पवित्र और ऐतिहासिक अवसर हम सबका फर्ज बनता है कि एकता, इत्तफ़ाक और मेलजोल की भावना को बढ़ाने की दिशा की तरफ अपने कदम बढ़ाएं ! हम लोग पहले ही बहुत पिछड़ चुके हैं, इसलिए, पंथक जत्थेबंदी को मज़बूत करने के लिए श्री अकाल तख़्त साहिब की छत्र-छाया में गुरु-पंथ के साथ जुड़ने का प्रण करें और संसार को 'सरबत्त का भला' के खालसाई मिशन से अवगत कराने के लिए किसी ठोस योजना का निर्माण करें!

सेवा के अनन्य प्रतिरूप : श्री गुरु अंगद देव जी

–डॉ. मनजीत कौर*

गुरबाणी का पावन फरमान है :

सेवा करत होइ निहकामी ॥
तिस कउ होत परापति सुआमी ॥
अपनी क्रिपा जिसु आपि करेइ ॥
नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २८६)

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का पावन फरमान है कि सेवा करते हुए जो फल की इच्छा नहीं रखता अर्थात् निष्काम भाव से सेवा करता है वह प्रभु को पा लेता है। जिस पर प्रभु स्वयं कृपा करता है, वही सेवक गुरु की शिक्षा को जीवन में धारण करता है।

सिक्खी का मार्ग निष्काम सेवा और श्वास-श्वास नाम जपने का मार्ग है। सेवा करके पहले इस हृदय रूपी बर्तन को स्वच्छ एवं उज्जवल करना पड़ता है तभी परमेश्वर का अमृतमयी नाम हृदय में हमेशा के लिए बस जाता है। सिक्खी में दो स्तम्भ माने गए हैं— सेवा और सुमिरन।

'सेवा' के माध्यम से ही एक के बाद दूसरे गुरु साहिबान ने आध्यात्मिक गद्दी प्राप्त की। इनमें से सर्वप्रथम अनन्य सेवा का उदाहरण मिलता है भाई लहिणा जी के जीवन से, जो श्री गुरु नानक देव जी की शरण में आकर सेवा का रूप हो गए तथा तन-मन से सेवा करते हुए स्वयं को गुरु-चरणों में पूर्णतया समर्पित कर दिया। फलस्वरूप ऐसा दिव्य हृदय निर्मित हुआ, जिसमें श्री गुरु नानक पातशाह ने अपनी ज्योति टिका दी और भाई लहिणा जी 'गुरु के अंग' लग कर 'गुरु अंगद देव जी' बन गए— सिक्ख धर्म के दूसरे पातशाह।

जन्म : श्री गुरु अंगद देव जी का जन्म १५०४ ई. में बैसाख वदी १, १५६१ विक्रमी को पिता भाई फेरूमल जी तथा माता दया कौर जी (जिन्हें 'सभराई' नाम से भी जाना जाता है) के घर गाँव मत्ते दी सरां जिला श्री मुक्तसर साहिब में हुआ। आपके पिता जी व्यापारी थे तथा आर्थिक रूप से आपका परिवार समृद्ध था।

विवाह तथा संतान : आपका विवाह १५१९ ई. में भाई देवीचंद खत्री की सुपुत्री माता खीवी जी के साथ हुआ, जो बहुत ही सेवाभावी एवं धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। आपके दो पुत्र— बाबा दासू जी एवं बाबा दातू जी तथा दो पुत्रियाँ— बीबी अमरो जी तथा बीबी अनोखी जी थीं। इनमें से बीबी अमरो जी

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३

के मुख से अमृतमयी बाणी सुनकर बाबा अमरदास जी श्री गुरु अंगद देव जी की शरण में आए और सेवा का रूप होकर गुरु-पद की प्राप्ति की।

श्री गुरु नानक देव जी से मिलाप : भाई लहिणा जी का परिवार धार्मिक प्रवृत्ति का था। इनके पिता जी हर वर्ष धार्मिक यात्रा पर जाने वाले दल के मुखिया के रूप में देवी-दर्शन के लिए जाया करते थे। जब पिता जी परलोक सिधार गए तो आप यात्रा-दल को लेकर देवी-दर्शन के लिए हर वर्ष उसी तरह जाने लगे जैसे पिता जी जाया करते थे। एक बार भाई जोध नामक सिक्ख के मुख से अमृतमयी बाणी सुनी। अन्त:करण में आनंद की ऐसी अनुभूति हुई कि मन ही मन निश्चय कर लिया कि अब की बार देवी-दर्शन हेतु जाते वक्त करतारपुर साहिब में श्री गुरु नानक देव जी के दर्शन अवश्य करने हैं। गुरु जी के दर्शन कर आप इतने प्रभावित हुए कि सदा के लिए उनके सिक्ख बन गए। आपकी आध्यात्मिक क्रियाशीलता तथा समर्पित सेवाभावना ने आपको सच्चा सिक्ख और फिर गुरु-पद का अधिकारी बना दिया। यह अनन्य सेवा-भाव की ही करामात थी, जिसने भाई लहिणा जी के हृदय को इतना निर्मल बना दिया जिसमें श्री गुरु नानक पातशाह की ज्योति टिक गई। इससे पूर्व अनेक कठिन परीक्षाएं हुईं। भाई लहिणा जी समस्त परीक्षाओं में अव्वल रहे और अन्तत: श्री गुरु नानक देव जी के 'अंग' बन 'गुरु अंगद देव जी' बने एवं श्री गुरु नानक देव जी के निर्मल पंथ को यथावत आगे चलाया तथा जनजीवन में कौमी चेतना का संचार किया।

लंगर-प्रथा को सुचारू रूप से चलाना : श्री गुरु नानक देव जी द्वारा चलाई गई लंगर-प्रथा (नि:शुल्क सामूहिक भोजन-ग्रहण प्रणाली) को श्री गुरु अंगद देव जी ने व्यवस्थित रूप से जारी रखा। इसमें इनकी सुपत्नी माता खीवी जी का विशेष योगदान रहा, जो अपने हाथों से अत्यंत श्रद्धा एवं प्रेम-भाव से संगत के लिए देसी घी वाली खीर तैयार किया करती थीं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी में इस बात का पुख्ता प्रमाण है कि माता खीवी जी बड़ी भली हैं और वे ऐसी हैं जैसे घने पत्तों की सुखदायक छाया हो। प्रभु-नाम की दौलत लंगर के रूप में बाँटी जा रही है। आध्यात्मिक जीवन देने वाला नाम-रस जैसे बाँटा जाता है, वैसे ही माता खीवी जी द्वारा लंगर में घी-युक्त खीर परोसी जा रही है :

बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली॥
लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अंम्रितु खीरि घिआली॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९६७)*

इस प्रकार गुरु जी द्वारा अपनी नेक स्वभाव

वाली सुपत्नी माता खीवी जी को साथ लेकर लंगर की सेवा में लगे रहने से न केवल लंगर की मर्यादा को सुव्यवस्थित रूप मिला अपितु गृहस्थ आश्रम की महानता को लोगों तक पहुंचाने का प्रयास भी सफल हुआ।

अकादमिक कार्यों में विशेष योगदान : श्री गुरु अंगद देव जी ने अनेक धार्मिक-सामाजिक कार्य उत्साहपूर्वक करते हुए, श्री गुरु नानक देव जी के मिशन को क्रियान्वित रूप देकर, मानवता के कल्याणार्थ अनेक योजनाएं बनाकर गुरु-घर का दायरा विस्तृत किया। श्री गुरु नानक देव जी की बाणी तथा अन्य संतों-भक्तों की बाणी को लिखित रूप दिया। पंजाबी भाषा को विकसित करने के लिए गुरमुखी लिपि में सुधार और परिष्कार कर भिन्न-भिन्न अक्षरों के साथ विविध ध्वनियों को प्रमाणित तौर पर निश्चित किया। फलस्वरूप भाषा में परिपक्वता आई। गुरु साहिब ने बाणी के प्रचार-प्रसार हेतु पाठशाला खोली, गुरबाणी के गुटके, पोथियां आदि तथा श्री गुरु नानक देव जी की जन्म साखी भी तैयार करवाई। बच्चों को एकत्र कर उन्हें स्वयं गुरमुखी की शिक्षा देते रहे और साथ ही 'बाल-बोध' कायदे भी तैयार किए। संगत में गुटके वितरित कर उनमें बाणी पढ़ने का उत्साह और लगन पैदा की।

व्यायामशालाओं की व्यवस्था : गुरु जी ने विदेशी शासन तथा बाहरी आक्रमणकारियों के अत्याचारों से टूट चुके मनोबल में पुन: शक्ति का संचार करने के उद्देश्य से नियमित व्यायामशालाओं की व्यवस्था की। बौद्धिक विकास के साथ-साथ शारीरिक बल हेतु कुश्ती लड़ कर हृष्ट-पुष्ट बने रहने के लिए मल्ल-अखाड़ों का निर्माण करवाया। इस प्रकार शोषित वर्ग को मानसिक एवं शारीरिक रूप से सशक्त कर शोषण से मुक्ति हेतु निरन्तर प्रेरित किया।

बाणी-रचना : श्री गुरु अंगद देव जी के हृदय-घर में श्री गुरु नानक पातशाह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की अमिट छाप थी। आप जी द्वारा ६३ श्लोकों की रचना हुई।

श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी का मूल आधार सेवा, सुमिरन एवं विनम्रता को हृदय से धारण करना है और यह सब गुरु-कृपा द्वारा ही सम्भव है। गुरु जी का पावन फरमान है :

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४६३)

गुरु की महानता दर्शाते हुए श्री गुरु अंगद देव जी स्पष्ट हिदायत करते हैं कि अगर सौ चन्द्रमा भी आकाश में उदित हो जाएं तथा हजार सूर्य भी निकल आएं, इतना प्रकाश होने के बावजूद भी गुरु के बिना (अंत:करण में) घोर अंधकार ही

बना रहता है।

गुरु जी के चिन्तनानुसार सतिगुरु के समक्ष किसी प्रकार वाद-विवाद अथवा तर्क निषेध है, यथा :

सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ॥
नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७४)

अर्थात् जो व्यक्ति अपने मालिक के समक्ष कभी तो शीश झुका कर प्रणाम करे और कभी जवाब-तलबी करे, ऐसा व्यक्ति जीवन-मार्ग से पूर्णतया भटका हुआ है।

'नाम' की महिमा का गायन करते हुए गुरु जी समझाते हैं कि उन्हीं जीवों का जीवन सफल है जो ईश्वर की बंदगी करने में संलग्न हैं :

नदरि तिन्हा कउ नानका नामु जिन्हा नीसाणु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२३९)

बंदगी करने वाला व्यक्ति परमेश्वर की रजा को ही सर्वोपरि मानवता है। इस संदर्भ में गुरु जी का फरमान है :

अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा॥
पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा॥
जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा॥
नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३९)

अर्थात् शरीर का प्रत्येक अंग जब विकार रहित होकर कार्य करे इन्द्रियों के सही इस्तेमाल से सम्बंधित प्रभु-हुक्म की पहचान कर ली जाए, तभी ईश्वर से मिलाप मुमकिन हो जाता है।

आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु॥
नानक जिस नो लगा तिसु मिलै लगा सो परवानु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४७४)

अंह को गुरु जी दीर्घ रोग मानते हैं और हिदायत करते हैं कि अहं को जीव अपने व्यक्तित्व का आभूषण न मानकर भयानक रोग के रूप में स्वीकार कर ले, तो यही जीव हेतु औषधि का काम करेगा। ऐसा होना भी प्रभु-कृपा द्वारा ही सम्भव है :

हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि॥
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि॥
नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४६६)

अहं-त्याग के साथ-साथ गुरु जी जीव को आत्मविश्लेषण हेतु प्रेरित करते हैं। दूसरों के अवगुण देखने की आदत मनुष्य का जीवन नर्क सदृश्य बना देती है। जीव अपने आप को परखे और अपनी कमियों को दूर करे, तभी वह सच्चा विश्लेषक कहलाएगा :

नानक परखे आप कउ ता पारखु जाणु॥
रोगु दारू दोवै बुझै ता वैदु सुजाणु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४८)

इस प्रकार नैतिक मूल्यों से भरपूर श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी गागर में सागर भरने सदृश्य है। सिक्ख धर्म के विकास में गुरु जी का योगदान अति महत्वपूर्ण है। उन्होंने श्री गुरु नानक देव जी द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को निश्चित एवं संगठित रूप प्रदान किया।

भाई गुरदास जी ने उनके गुणों का वर्णन बाखूबी किया है और २४वीं वार की ७वीं पउड़ी में उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला है कि श्री गुरु अंगद देव जी प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी के नेक आज्ञाकारी सिद्ध हुए हैं— "पुतु सपुतु बबाणे लहणा ॥" यही नहीं, भाई बलवंड जी-भाई सत्ता जी ने गुरु जी की महिमा का गायन करते हुए अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित किए हैं। विविध उपनामों से सुसज्जित उनके पावन वचन हैं :

फेरि वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥
जपु तपु संजमु नालि तुधु होरु मुचु गरूरु ॥
लबु विणाहे माणसा जिउ पाणी बूरु ॥
वर्हिऐ दरगह गुरू की कुदरती नूरु ॥
जितु सु हाथ न लभई तूं ओहु ठरूरु ॥
नउ निधि नामु निधानु है तुधु विचि भरपूरु ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९६७)

अर्थात् बाबा फेरू जी के सुपुत्र श्री गुरु अंगद देव जी ने खडूर साहिब की शोभा को बढ़ाया है। अन्य जगत तो बहुत अहं करता है जबकि आपके पास जप-तप-संयम होने के कारण आपका स्वभाव सदास्थिर बना रहा। जिस प्रकार पानी को शैवाल (काई) खराब कर देती है वैसे ही व्यक्ति को लोभ और माया नष्ट कर देते हैं। गुरु के दरबार में प्रभु-नाम की वर्षा होते रहने से आप पर प्राकृतिक रूप से सौन्दर्य की झलक दिखाई देती रहती है। आप वो समुद्र हो जो शीतल है और जिसकी गहराई को मापा नहीं जा सकता। प्रभु का नाम रूपी खजाना हृदय में भरपूर है।

सेवा का प्रतिरूप होकर श्री गुरु अंगद देव जी ने गुरु-हुक्म की पालना श्वास-ग्रास करते हुए सम्पूर्ण संसार को ही जीत लिया है। विश्व भर में उनका यश फैला हुआ है। भट्ट कल सहार जी द्वारा गुरु जी की उपमा इस प्रकार की गई है :

जगु जीतउ गुर दुआरि खेलहि समत सारि रथु उनमनि लिव राखि निरंकारि ॥
कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३९१)

श्री गुरु अमरदास जी

–डॉ. कशमीर सिंघ नूर*

जिन जिज्ञासुओं के मन में भक्ति-मार्ग को समझने की, जानने की, सच्चा गुरु पाने की, सच्चा ज्ञान प्राप्त करने की, जीवों के ईश्वर व प्रकृति के साथ सार्थक संबंधों को पहचानने की जिज्ञासा होती है, वे जिज्ञासु कभी आराम से नहीं बैठते, जब तक उनकी जिज्ञासा शांत नहीं हो जाती, मनचाहा ज्ञान प्राप्त नहीं हो जाता, सच्चे गुरु के दर्शन नहीं हो जाते। वे अपनी जिज्ञासा शांत करने हेतु तथा मन की शांति प्राप्त करने हेतु जप-तप-साधना, पूजा-पाठ, दान, तीर्थ-स्नान आदि अनेक उपाए करते हैं। यही हाल श्री गुरु अमरदास जी का श्री गुरु अंगद देव जी के दर्शन करने तथा उनका सान्निध्य व आशीर्वाद प्राप्त करने से पूर्व था। उनका जीवन अन्य अनेक जिज्ञासुओं की भांति बहुत दिलचस्प है। वे भी सच्चे मार्गदर्शक की तलाश में बहुत दूर-दूर तक चले जाते थे। उनके मन का भटकाव रुक नहीं रहा था।

श्री गुरु अमरदास जी का जन्म जिला श्री अमृतसर साहिब के गांव बासरके में ५ मई, १४७९ ई. (संवत् १५३६, बैसाख सुदी १४) को हुआ। श्री गुरु नानक देव जी का जन्म १४६९ ई. में हुआ था, इसलिए कहा जा सकता है कि श्री गुरु अमरदास जी के जन्म के समय श्री गुरु नानक देव जी की आयु दस वर्ष थी। सन् १५४० तक आप गांव बासरके में ही रहे। 'महिमा प्रकाश' ग्रंथ में वर्णन किया गया है कि आप दरियाई रेशम (करै बिवहार रेशम दरियाई) का व्यापार किया करते थे। आप लोगों की भलाई करने में भी सदैव आगे रहते थे। बासरके में पीने वाले पानी की कमी थी। लोगों को पानी दूर-दूर से लाना पड़ता था, इसलिए आपने पानी की कमी को देखते हुए वहां पर पहले एक कुआं खुदवाया, बाद में तालाब बनवाया।

वे प्राय: तीर्थटन किया करते थे। उन्होंने जीवन में बीस बार गंगा-स्नान किया। उन दिनों गंगा-स्नान हेतु जाना आसान काम नहीं होता था। यह अति दुरूह कार्य होता था। यात्रा की कठिनाई को झेलना तथा कदम-कदम पर खतरा मोल लेना, यह तो कोई लगन वाला व्यक्ति ही

*बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००८, फोन : ९८७२२-५४९९०

कर सकता था। श्री गुरु अमरदास जी के मन की जिज्ञासा शांत नहीं हो पा रही थी। हालत पपीहे जैसी थी। जैसे-जैसे वे तीर्थाटन करते, वैसे-वैसे भटकना, लालसा व जिज्ञासा बढ़ती गई।

बीसवीं वार जब वे गंगा-स्नान के लिए गए, तो एक ऐसी घटना घटित हुई कि उनकी जीवन-गति में तेज उछाल आया।

श्री गुरु अमरदास जी की भेंट एक ब्रह्मचारी के साथ हुई। उस ब्रह्मचारी के साथ आपका मेलजोल काफी बढ़ गया। खाना-पीना भी साथ-साथ होने लगा। एक दिन उस ब्रह्मचारी ने पूछ लिया, "आपका गुरु कौन है?"

श्री गुरु अमरदास जी ने जवाब दिया, "गुरु की तलाश जारी है। अभी तक मुझे गुरु नहीं मिला है।"

ब्रह्मचारी को यह बात अच्छी नहीं लगी और वो यह कहते हुए उनका साथ छोड़ गया, "हे भगवान! निगुरे का संग, निगुरे का धान, निगुरे के हाथ का पकाया अन्न? मेरा तो जन्म गया . . .।"

यूं तो भारतीय सभ्यता के प्रारंभिक विकास काल से ही भारतीय समाज में गुरु-शिष्य की अवधारणा का महत्व रहा है, किंतु भक्ति-काल में गुरु-शिष्य परंपरा का महत्व और अधिक बढ़ गया था तथा इसी काल में आगे भी इस परंपरा का कड़ाई से पालन होने लगा था। यह तथ्य उपरोक्त घटना से उजागर होता है।

ब्रह्मचारी की बातें सुनकर श्री गुरु अमरदास जी के हृदय को चोट पहुंची और उनकी आत्मा सच्चे गुरु की खोज में और ज्यादा व्याकुल हो उठी। इस एक घटना ने उनके मन में हलचल तेज कर दी। वे विचारों में जागकर रातें व्यतीत करने लगे। पानी की कमी को देखते हुए कुएं खुदवाकर एवं तालाब बनवाकर वे प्रकृति के साथ जीवों के संबंध को समझ ही चुके थे, बल्कि अन्य लोगों को भी समझा चुके थे। बीस बार गंगा-स्नान करने के बाद भी उनकी आत्मिक जिज्ञासा शांत नहीं हो पाई थी। फिर ब्रह्मचारी की बातों ने उनके अंत:करण को झकझोर दिया।

घर लौटे, मगर मन की बेचैनी और बढ़ने लगी थी। किसी अदृश्य की तलाश में मन खिन्न था। समय बीतता गया। एक दिन प्रात:काल उठ कर घर से बाहर निकले तो उनके मन में निम्नलिखित शबद की गूंज सुनाई दी। वे रुके और सुनकर प्रभावित हुए। जहाँ से आवाज आ रही थी वो घर उनके भाई का था। पूरा शब्द देखिए :

करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए॥

जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ तउ गुण नाही अंतु हरे॥१॥

चित चेतसि की नही बावरिआ॥

हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥१ ॥ रहाउ ॥
जाली रैनि जालु दिनु हूआ जेती घड़ी फाही तेती ॥
रसि रसि चोग चुगहि नित फासहि छूटसि मूड़े कवन गुणी ॥२ ॥
काइआ आरणु मनु विचि लोहा पंच अगनि तितु लागि रही ॥
कोइले पाप पड़े तिसु ऊपरि मनु जलिआ संन्ही चिंत भई ॥३ ॥
भइआ मनूरु कंचनु फिरि होवै जे गुरु मिलै तिनेहा ॥
एकु नामु अंम्रितु ओहु देवै तउ नानक त्रिसटसि देहा ॥४ ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९९०)*

श्री गुरु अमरदास जी के मन में जानने की उत्कंठा जगी। उन्होंने बीबी अमरो जी से पूछा, "जो शबद आप गा रही थीं, वह किसका है?" बीबी अमरो जी श्री गुरु अंगद देव जी की सुपुत्री थीं तथा श्री गुरु अमरदास के भ्राता की पुत्र-वधू। उन्होंने उत्तर दिया कि "यह शबद श्री गुरु नानक देव जी का है। अब उनके बाद गुरु-पद पर मेरे श्रद्धेय पिता श्री गुरु अंगद देव जी विराजमान हैं।" श्री गुरु अमरदास जी बीबी अमरो जी को साथ लेकर खडूर साहिब पहुंचे। श्री गुरु अंगद देव जी से भेंट हुई। पहले दीदार में ही मन को चैन मिलता महसूस हुआ। इरादा बनाया कि अब यहीं ठौर बना लिया जाए। जिसकी तलाश थी, वो मिल गया है।

श्री गुरु अमरदास जी सन् १५४० से लेकर १५५२ ई. तक खडूर साहिब में ही रहे तथा समपर्ण-भाव से सेवा की। प्रतिदिन आधी रात के समय जाग जाते तथा दरिया ब्यास से जल लाने हेतु चले जाते। लाए गए जल से श्री गुरु अंगद देव जी को स्नान करवाते। इसी तरह निरंतर सेवा करते रहे।

उन्होंने श्री गुरु अंगद देव जी की आज्ञानुसार गोइंदवाल साहिब बसाया। वहां के मरवाह क्षत्रिय (खत्री) गोंदा ने श्री गुरु अंगद देव जी के पास विनती की कि उसकी जमीन पर नगर बसाया जाए। वह जमीन नदी-तट पर थी। चहुं ओर से देखा, स्थान रमणीय था, किंतु लोग भूतादि के भय के कारण वहां पर बसते नहीं थे। श्री गुरु अमरदास जी ने उस जगह को आबाद कर लोगों को भूतादि के भय से मुक्त किया।

अन्य व्यस्तताएं बेशक बढ़ती गईं, परंतु सेवा में कमी न आने दी। हुक्म में बिंधे हुए थे। उनके जीवन से संबंधित एक घटना बहुत प्रसिद्ध है। लगभग प्रत्येक सिक्ख ने यह पढ़ी-सुनी है—

सन् १५५१ का जनवरी महीना था। वर्षा वाला दिन था और ठंड भी बहुत ज्यादा थी। श्री गुरु अमरदास जी सदैव की भांति उस दिन भी दरिया ब्यास से जल लाने गए। बारिश हो रही

थी। वे जब वापिस लौट रहे थे, तो चलते हुए ठोकर लगी। मानों धरती कांप उठी हो। उनके धैर्य व विश्वास की परीक्षा की घड़ी थी। राह के किनारे पर एक जुलाहे की खड्डी थी। ठोकर लगते ही उस खड्डी में जा गिरे। इसके बावजूद गागर में से पानी न बहने दिया। यूं कहें, धैर्य व निश्चय को संभाले रखा। आज भगवान का उन पर खूब प्यार उमड़ रहा था। जब उनके गिरने का खटका हुआ तो जुलाहा हड़बड़ाकर उठा। उसकी पत्नी (जुलाही) ने तंज कसते हुए कहा, "अरे, वही होगा अमरू निथावां (निराश्रित), जो आ गिरा है अपने समधी के पांव में! बावला हो गया है जो इतनी भयानक रात में भी . . . !" इसके अलावा और भी अपशब्द उसने कहे। सदैव मीठा बोलने का सबक देने वाले श्री गुरु अमरदास जी ने इतना ही कहा, "मैं नहीं निथावां! मुझे तो मेरे गुरु का आश्रय मिल गया है। मैं नहीं बावला! तू बावली है, जो मुझ पर तंज कसती है!" जैसे-तैसे श्री गुरु अमरदास जी खड्डी में से निकले और अपने गंतव्य की ओर चल पड़े।

यह बात श्री गुरु अंगद देव जी तक जा पहुंची। उधर जुलाहा भी गुरु जी के पास आ पहुंचा और बोला कि "रात में मेरी पत्नी ने श्री गुरु अमरदास जी को अपशब्द बोल दिए थे, तब से वो पागलों जैसी हरकतें करने लगी है। कृप्या, उसे क्षमा कर दीजिए!" श्री गुरु अंगद देव जी ने कहा कि "मानवता की सेवा करो! सेवा करने से सभी कष्ट दूर हो जाते हैं।" उन्होंने श्री गुरु अमरदास जी को पूरी संगत के सामने सम्मान देते हुए कहा :

"तुसीं निमाणिआं दा माण हो!
तुसीं निथाविआं दी थां हो!
तुसीं निओटियां दी ओट हो!
तुसीं निधरियां दी धिर हो!
तुसीं निआसरियां दा आसरा हो!
तुसीं गई बहोड़ हो! बंदी छोड़ हो!"

श्री गुरु अंगद देव जी ने निर्णय ले लिया कि उनके आध्मात्मिक उत्तराधिकारी श्री गुरु अमरदास जी ही हैं।

सन् १५५२, मार्च महीने में श्री गुरु अंगद देव जी ने गुरगद्दी श्री गुरु अमरदास जी को सौंप दी और गोइंदवाल साहिब को धर्म-प्रचार का केंद्र बना कर धर्म-प्रचार करने हेतु कहा।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन का आध्यात्मिक पक्ष

*–स. परमजीत सिंघ 'सुचिंतन'**

भूमिका : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी (१६६६–१७०८ ई.) का जीवन केवल वीरता और साहस का ही प्रतीक नहीं है बल्कि गहन आध्यात्मिक चेतना, अकाल पुरख की भक्ति और मानवता के प्रति प्रेम का जीवंत उदाहरण भी है। आप महान बाणीकार, विचारक, संत, योद्धा और समाज-सुधारक थे, जिन्होंने भारतीय समाज एवं धर्म को नई दिशा प्रदान की। आपने अपने जीवन द्वारा दिखाया कि धर्म केवल पूजा या अनुष्ठान तक सीमित नहीं बल्कि यह एक जीवंत साधना है जो व्यक्ति को न्याय, करुणा और साहस की दिशा में अग्रसर करती है। आपकी साधना में तप, त्याग, प्रेम और अकाल पुरख की भक्ति का अद्वितीय संगम था। आपके लिए अन्याय के विनाश और सत्य की रक्षा हेतु किया गया युद्ध भी धर्म का साधन था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जीवन आध्यात्मिकता और लौकिकता का अद्भुत संतुलन प्रस्तुत करता है।

प्रारंभिक जीवन और आध्यात्मिक संस्कार : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का प्रकाश पटना साहिब (बिहार) में सन् १६६६ ई. में, पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब तथा माँ माता गुजरी जी के घर हुआ। बचपन से ही आपके मन में, अकाल पुरख की भक्ति और सत्य के प्रति आकर्षण था। बाल्यावस्था में ही आप जी धार्मिक ग्रंथों और वीरता की कथाओं से प्रभावित हुए। आपके पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब, जो स्वयं एक उच्च कोटि के आध्यात्मिक संत और शहीद थे, ने अपनी शहादत देकर, धर्म की रक्षा हेतु शहीद होने की प्रेरणा दी। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के शहीद होने के बाद, मात्र नौ वर्ष की आयु में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्ख पंथ का नेतृत्व किया। बचपन से ही आप जी में भक्ति, साहस और तपस्या के गुण जागृत थे। आप जी संस्कृत, बृज, फारसी आदि भाषाओं के विद्वान थे और आध्यात्मिक रूप से चिंतनशील थे। आपकी माँ माता गुजरी जी ने आप में करुणा और सहिष्णुता के बीज बोए। पटना साहिब से श्री अनंदपुर साहिब तक की यात्रा में आप जी ने अनेक संतों, विद्वानों और गुरमुख व्यक्तियों से, भक्ति-रस व ज्ञान-रस का अनुभव प्राप्त किया। आपके मन में यह विचार पक्का हुआ कि अकाल पुरख एक है और उसकी सच्ची उपासना सत्य, साहस एवं सेवा के माध्यम से होती है।

आध्यात्मिक दृष्टि का विकास : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का आध्यात्मिक जीवन केवल ध्यान या पूजा तक सीमित नहीं था। आपकी दृष्टि में धर्म वही है जो मानव को न्याय, समानता और करुणा की दिशा में ले जाए। आप जी ने गुरबाणी का सार समझाते हुए, एक सर्वधर्म समभाव की भावना विकसित की। आपके लेखन में यह स्पष्ट झलकता है कि आप जी ने अकाल पुरख को सर्वत्र विद्यमान और निर्गुण व निर्विकार माना। आपकी बाणी में, आपका यह

** ७६ फेस-३, अर्बन अस्टेट, दुग्गरी, लुधियाना– १४१०१३, फोन: ९७७९१-२४५००*

विश्वास गहराई से प्रकट होता है। आपकी साधना बाहरी अनुष्ठान पर नहीं, बल्कि अंतरात्मा की निर्मलता पर आधारित थी।

आध्यात्मिकता और वीरता का समन्वय : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का सबसे महत्वपूर्ण योगदान था— भक्ति और शक्ति का अद्भुत मेल। आप जी ने कहा कि जब सब उपाय विफल हो जाएं तो कृपाण उठाना धर्म है। यह कथन केवल युद्ध की प्रेरणा नहीं बल्कि धर्म की सुरक्षा का आध्यात्मिक संदेश था। आपके लिए युद्ध अन्याय के विरुद्ध एक साधना थी। एक धर्म-युद्ध, जिसमें अहंकार नहीं बल्कि अकाल पुरख के प्रति कर्त्तव्य की भावना थी। आपकी बाणी में यह भाव बार-बार आता है कि हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह अन्याय के विरोध में खड़ा हो। इस प्रकार, आप जी ने साधुता और वीरता को एक साथ जोड़कर 'संत-सिपाही' के रूप में नया आध्यात्मिक आदर्श प्रस्तुत किया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का लेखन और आध्यात्मिक दर्शन : गुरु साहिब के साहित्य में गहरा दार्शनिक और आध्यात्मिक भाव विद्यमान है। आपकी बाणी में अकाल पुरख की महिमा, धर्म की व्याख्या, निराकार भाव, न्याय, साहस, आत्मबल और नैतिकता का गहन चिंतन है। 'जापु साहिब' सिक्खों की प्रात:कालीन प्रार्थना है, जिसमें गुरु साहिब ने एक निराकार, सर्वशक्तिमान अकाल पुरख की अनंत महिमा का गुणगान किया है। इसमें गुरु साहिब ने कहा है कि अकाल पुरख न किसी जाति में बंधा है, न ही वह किसी रूप में सीमित है। वह सर्वव्यापक है जो भक्त के हृदय में निवास करता है। यह बाणी आध्यात्मिक साधना का मार्गदर्शन देती है। इसी तरह आपकी अन्य बाणियां भी भक्ति का चरम रूप हैं, जहाँ गुरु साहिब ने अकाल पुरख को 'अकाल' यानी कालातीत शक्ति के रूप में पूजित किया। आपकी बाणी, धार्मिक सहिष्णुता और सर्वधर्म एकता का अद्भुत उदाहरण है। गुरु साहिब का संदेश है :

हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥

(अकाल उसतत)

भावार्थ : सभी मनुष्य अकाल पुरख की संतान हैं। किसी भी मनुष्य के साथ धर्म या रूप के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता।

साहित्य-सृजन के माध्यम से गुरु साहिब ने अपने अनुयायियों में सात्विकता, धर्मशीलता और ऊर्जा का संचार किया।

अकाल पुरख के साथ एकत्व की भावना : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की भक्ति केवल सैद्धांतिक नहीं थी बल्कि अनुभवात्मक थी। यह ऐसी साधना थी, जिसमें भक्त और अकाल पुरख के बीच कोई भेद नहीं रहता। आपका विश्वास था कि जब मनुष्य अपने 'अहंकार' को मिटा देता है तो वह अकाल पुरख के साथ एकत्व प्राप्त कर लेता है। आपके अनुसार, प्रत्येक मनुष्य के भीतर अकाल पुरख का प्रकाश विद्यमान है। आपकी दृष्टि में साधना का उद्देश्य बाहरी कर्मकांड नहीं बल्कि आत्मबोध व अपने भीतर विद्यमान अकाल पुरख का अनुभव करना है।

नाम-सुमिरन और साधना का महत्व : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने नाम-जप या नाम-सुमिरन को आध्यात्मिक जीवन की मूल आत्मा बताया है। आप जी ने कहा कि जो मनुष्य निरंतर अकाल पुरख का

सुमिरन करता है, वही सच्चा भक्त है। नाम-सुमिरन से मन की अशुद्धियाँ मिटती हैं, अहंकार का नाश होता है और जीवन में निर्मलता आती है। आपकी साधना में 'नाम' केवल शब्द नहीं था, बल्कि जीवन का स्पंदन, शक्ति और सत्य का अनुभव था।

सेवा, समानता और करुणा : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की आध्यात्मिकता केवल ध्यान या उपासना तक सीमित नहीं थी, आपके लिए सेवा ही साधना थी। आप जी ने अपने अनुयायियों को सिखाया कि समाज के दुर्बलों, पीड़ितों और जरूरतमंदों की सहायता करना ही सच्ची पूजा है। आपकी दृष्टि में अकाल पुरख की सेवा, मनुष्य की सेवा में ही निहित है। आप जी ने लंगर, संगत और पंगत की परंपरा को सुदृढ़ किया ताकि जात-पांत और ऊँच-नीच का भेद मिटे। आपका यह विचार आज भी सिक्ख धर्म की मूल आत्मा है।

स्त्री के प्रति सम्मान और समानता का संदेश : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की आध्यात्मिक दृष्टि में स्त्री को पूजनीय स्थान प्राप्त था। आपकी दृष्टि में स्त्री समाज का केंद्र-बिंदु है। आप जी ने स्त्रियों को धर्म-युद्ध, शिक्षा और समाज-सेवा में समान अधिकार देना सुनिश्चित किया। यह दृष्टिकोण तत्कालीन समाज में क्रांतिकारी था जो आज भी नारी-समानता का प्रेरक सिद्धांत है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का प्रभाव और आध्यात्मिक विरासत : गुरु साहिब के जीवन का प्रभाव न केवल सिक्ख धर्म पर बल्कि पूरे मानव समाज पर पड़ा। आपकी शिक्षाओं ने भारत में स्वाभिमान, एकता और धर्मनिष्ठा की भावना जगाई। आप जी ने एक ऐसा समाज गढ़ा, जहाँ अकाल पुरख की भक्ति, समानता और न्याय के मूल्य एक साथ पनपें। आपकी विरासत आज भी जीवंत है। आपका जीवन आज भी हमें प्रेरित करता है कि यदि कोई व्यक्ति प्रेम का खेल खेलना चाहता है तो वह अपना सिर हथेली पर रखकर आपकी गली में आए। सच्ची भक्ति कुर्बानी मांगती है। कुर्बानी की भावना वाला मनुष्य ही अकाल पुरख के निकट जाता है।

खालसा की स्थापना - एक आध्यात्मिक क्रांति : सन् १६९९ ई. में बैसाखी के दिन, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की साजना (स्थापना) की। खालसा पंथ की स्थापना श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के आध्यात्मिक दर्शन का चरम बिंदु थी। यह केवल राजनीतिक या सामाजिक घटना नहीं थी बल्कि एक महान आध्यात्मिक क्रांति थी। इसका उद्देश्य व्यक्ति में समानता, वीरता, सेवा, निडरता और उच्च नैतिकता जागृत करना था। खालसा को बाह्य प्रतीकों (पाँच ककार) के माध्यम से आत्मनियंत्रण, कर्त्तव्यनिष्ठा एवं आत्मगौरव का पाठ पढ़ाया। 'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतह' का नारा देते हुए, गुरु साहिब ने समाज में नई चेतना का संचार किया।

'खालसा' का अर्थ है— 'पवित्र आत्मा', 'निर्मल साधक', जो केवल अकाल पुरख के आदेश का पालन करता है। 'खालसा पंथ' का उद्देश्य था कि हर सिक्ख अपने भीतर संत और सिपाही दोनों के गुण विकसित करे। संत, जो अकाल पुरख का भक्त और करुणामय हो। सिपाही, जो अन्याय के विरुद्ध डटकर खड़ा हो। गुरु साहिब ने कहा :

ख़ालसा मेरो रूप है ख़ास।

ख़ालसे महि हौ करौ निवास ।

इन पंक्तियों में गुरु साहिब की आध्यात्मिक दृष्टि झलकती है। आप जी ने खालसा को अकाल पुरख के दिव्य गुणों का प्रतीक बनाया। खालसा का जीवन 'नाम जपना, किरत करना और वंड छकना' के सिद्धांतों पर आधारित है। यहां नाम-जपना केवल मंत्रोच्चारण नहीं बल्कि जीवन में अकाल पुरख की उपस्थिति का निरंतर अनुभव है। गुरु साहिब ने कहा है :

ख़ालसा अकाल पुरख की फ़ौज।
प्रगटिओ ख़ालसा प्रमातम की मौज।

खालसा केवल सैनिक संगठन नहीं बल्कि एक आध्यात्मिक सेना भी है जो प्रेम, भक्ति और धर्म की रक्षा के लिए समर्पित है।

धर्म की रक्षा और आध्यात्मिक साहस : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन का सबसे उज्ज्वल अध्याय है— धर्म की रक्षा के लिए त्याग और वीरता। जब मुग़ल शासन के अत्याचार बढ़े तो आप जी ने अपनी कृपाण को धर्म की रक्षा का प्रतीक बनाया। परंतु, यह कृपाण किसी धर्म, व्यक्ति या जाति के विरुद्ध नहीं थी बल्कि अधर्म और अन्याय के विरुद्ध थी। आप जी ने कहा कि सच्चा धर्म वही है जो सब में अकाल पुरख के दर्शन करे और जो दुर्बलों की रक्षा करे। आपके जीवन का यह पक्ष दर्शाता है कि आध्यात्मिकता केवल मौन-धारण नहीं बल्कि कर्म में धर्म का अवतरण है।

साहस, शहादत और निडरता : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जीवन साहस और नि:स्वार्थ शहादत का परिचायक है। आप जी ने अपने अनुयायियों को शुभ कर्मों से कभी पीछे न हटने की प्रेरणा दी :

देह सिवा बर मोहि इहै सुभ करमन ते कबहूं न टरों॥
(चंडी चरित्र)

आप जी मानते थे कि नैतिक मूल्यों, सत्य और न्याय की रक्षा हेतु संघर्ष भी आवश्यक है, परंतु वह संघर्ष अहंकार या स्वार्थवश नहीं, बल्कि धर्म के अनुरूप होना चाहिए।

ज़फ़रनामह – आध्यात्मिक दृढ़ता का दस्तावेज़ : जब औरंगज़ेब ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पर, आपके परिवार पर व आपके सिक्खों पर अत्याचार किए तो गुरु साहिब ने उसे फारसी भाषा में 'ज़फ़रनामह' नामक एक पत्र लिखा। यह पत्र केवल राजनीतिक प्रतिरोध नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक साक्ष्य है, जिसमें गुरु साहिब ने कहा कि सत्य की विजय और असत्य की पराजय अनिवार्य है। आप जी ने कहा :

चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत ॥
हलाल असतु बुरदन ब शमशेर दसत ॥२२॥

भावार्थ : जब सब उपाय निष्फल हो जाएँ तो तेग उठाना धर्म है।

यह पंक्ति आपके आध्यात्मिक साहस और नैतिक दृढ़ता का प्रतीक है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की मानवीय करुणा : गुरु साहिब ने कभी भी प्रतिशोध की भावना नहीं रखी। आप जी ने अपने शत्रुओं को भी क्षमा कर दिया। जब बहादुर शाह ने आपसे मिलना चाहा, तो आप जी ने खुले दिल से स्वीकार किया। आप जी ने कहा कि घृणा से घृणा नहीं मिटती, प्रेम ही इसका समाधान है। आपका जीवन यह सिखाता है कि सच्ची आध्यात्मिकता करुणा में है, न कि कठोरता में।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरुआई देना : श्री गुरु

गोबिंद सिंघ जी की आध्यात्मिक दृष्टि का सबसे महान उदाहरण है— श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरुआई देना। सन् १७०८ ई. में नांदेड़ (महाराष्ट्र) में आप जी ने 'गुरु मानिओ ग्रंथ' का आदेश दिया।

गुरु साहिब ने यह घोषणा कर दी कि अब से श्री गुरु ग्रंथ साहिब ही 'गुरु' होंगे यानी कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब ही सिक्खों का शाश्वत मार्गदर्शक रहेंगे। आप जी ने यह स्पष्ट कर दिया कि अध्यात्म का मार्ग पंथ, जाति, भाषा या किसी अन्य भेद से परे है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब ही अब सिक्खों के मार्गदर्शक, चेतना और गुरु हैं। इसका गहरा आध्यात्मिक अर्थ है कि सत्य और धर्म की तलाश के लिए बाह्य व्यक्ति नहीं, बल्कि दिव्य-ज्ञान और संत-विचार ही सदैव पथदर्शक हैं।

यह विचार आपकी आध्यात्मिक परिपक्वता का चरम रूप था। आप जी ने मनुष्य को बाहरी व्यक्ति-पूजा से मुक्त कर, शब्द और सत्य की आराधना का मार्ग दिया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की आध्यात्मिकता का सार्वभौमिक संदेश : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जीवन एक महान साधना-यात्रा थी, जिसमें भक्ति, बुद्धि, त्याग कुर्बानी और न्याय का अद्भुत संतुलन है। आप जी ने यह सिद्ध कर दिया कि आध्यात्मिकता जीवन से पलायन नहीं बल्कि जीवन का आलोक है। आपकी आध्यात्मिक दृष्टि हमें सिखाती है कि :—

अकाल पुरख एक है। वह किसी धर्म, जाति या भाषा के बंधन में बंधा हुआ नहीं है।

अकाल पुरख सर्वत्र है।
जो व्यक्ति सच्चे मन से प्रेम करता है,
वही अकाल पुरख को पा लेता है।
मानवता ही सर्वोच्च धर्म है।
अन्याय के विरुद्ध खड़े होना भी भक्ति का ही रूप है।
सच्चा भक्त वही है जो प्रेम और करुणा में जीता है।

मनुष्य का जीवन तभी सार्थक है जब वह दूसरों के लिए जीता है।

आपका सम्पूर्ण जीवन यह उद्घोष करता है कि वाहिगुरु की भक्ति में ही सच्ची वीरता है और वीरता में ही सच्ची भक्ति।

उपसंहार : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन का आध्यात्मिक पक्ष उनके प्रत्येक कार्य, उपदेश, बाणी और संघर्ष में दिखाई देता है। उन्होंने भक्ति, विवेक, अहिंसा, कर्म, समत्व और सशक्तिकरण के माध्यम से समाज को नई दिशा दी। आज भी उनके वचनों और जीवन से प्रेरणा लेकर समाज में सच, न्याय, समानता, सहिष्णुता और भाईचारे की स्थापना की जा सकती है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन का आध्यात्मिक पक्ष, मानव सभ्यता के लिए एक अमर दीपक है जो युगों तक हमें यह सिखाता रहेगा कि धर्म, साहस और करुणा एक ही सत्य के तीन रूप हैं। आप जी ने अपने कर्म और उपदेशों से यह संदेश दिया कि सच्चा साधक वही है जो दूसरों के लिए जीता है, अन्याय के विरुद्ध लड़ता है और हर स्थिति में अकाल पुरख को याद रखता है। आपका जीवन हर युग में हमें प्रेरित करता रहेगा कि आध्यात्मिकता का अर्थ है— प्रेम, त्याग, कुर्बानी और न्याय का मार्ग।

सहज भक्ति के नायक : भक्त धन्ना जी

*–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

मन की निर्मलता और सहजता परमात्मा की सबसे बड़ी देन है। इसे प्राप्त करना परमात्मा का प्रत्यक्ष दर्शन हो जाना है। इस सिद्धि की कामना धर्म-जगत् के परम संतों, ऋषियों, मुनियों, साधकों को रही है। जिस पर परमात्मा की कृपा हुई उसका जीवन धन्य हो गया और वह सम्पूर्ण मानवता का उद्धारक, प्रेरणा-स्रोत बन गया। ऐसे कतिपय ही हुए हैं जिनमें भक्त धन्ना जी का नाम प्रमुखता के साथ सामने आता है। भक्त धन्ना जी की भक्ति-भावना और विचार-दृष्टि का सम्मान करते हुए उनकी बाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में स्थान दिया गया है।

भक्त धन्ना जी का जन्म राजस्थान के टांक जिला के धुआं कलां गाँव में एक कृषक परिवार में सन् १४१५ के अप्रैल माह में हुआ था। आपके पिता का नाम भाई पन्ना जी और माता का नाम माता रेवा जी था। भक्त धन्ना जी अति सरल हृदय के व्यक्ति थे और अपने खेतों में लगन से कार्य किया करते थे। वे जिस मार्ग से अपने खेतों की ओर जाया करते थे, राह में एक ब्राह्मण पुजारी का घर पड़ता था। एक बार वे उस ब्राह्मण के घर के सामने से गुजर रहे थे तो ब्राह्मण 'ठाकुर' को 'भोग' लगा रहा था। ऐसा होते हुए पहली बार देखा तो भक्त धन्ना जी उत्सुकतावश रुक गये और पूछा कि "आप यह क्या कर रहे हैं?" ब्राह्मण ने टालने के लिये कह दिया कि 'ठाकुर' को भोजन खिला रहा हूँ। भक्त धन्ना जी का आश्चर्य बढ़ गया। ब्राह्मण की बात पर विश्वास करते हुए उन्होंने पूछा कि "इससे क्या लाभ होता है?" ब्राह्मण ने कहा कि "जो भी चाहो 'ठाकुर' दे देते हैं।" भक्त धन्ना जी को यह आदान-प्रदान अति रुचिकर लगा। उन्होंने अपने लिये एक 'ठाकुर' मांग लिया। उस ब्राह्मण ने निकट पड़ा एक पत्थर उठाया और 'ठाकुर' कह कर दे दिया। भक्त धन्ना जी उसे घर ले आये और भोजन तैयार कर ब्राह्मण के दिये सामान्य पत्थर 'ठाकुर' के आगे रख दिया। वे उस 'ठाकुर' को साक्षात भगवान जानकर 'ठाकुर' से भोजन ग्रहण करने की प्रार्थना करने लगे। थाली का भोजन वैसा का वैसा ही पड़ा रहा। भक्त धन्ना जी भूखे-प्यासे बैठे रहे कि जब 'ठाकुर' भोजन ग्रहण कर लें, तब वे खायें। पूरी रात व्यतीत हो गई। ऐसा करते हुए दो रातें बीत गईं और तीसरा दिन आ गया। भूखे-प्यासे भक्त धन्ना जी अति निर्बल हो गये, किन्तु 'ठाकुर' के भोजन ग्रहण

**ई– १७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ – २२६०१७, फोन : ९४१५९६०५३३, ८४१७८५२८९९*

करने की प्रतीक्षा करते रहे। कहते हैं कि अन्तर्यामी भगवान भक्त धन्ना जी के अंत:करण में प्रकट हुए। उन्होंने भक्त धन्ना जी को प्रेमपूर्वक भोजन ग्रहण करने को कहा। भक्त धन्ना जी आनंद से खिल उठे। अब भक्त धन्ना जी अकेले नहीं थे, उनके साथ उनका असली ठाकुर— भगवान था। अब उनका नजरिया, जीवन-ढंग बदल-सा गया था। उन्हें ऐसा लगने लगा कि वे जो भी कार्य कर रहे है वो स्वयं उनका भगवान कर रहा हैं। वे तो मात्र जरिया हैं। उनका भगवान तो उनके साथ खेतों में भी काम करने जाता है। उन्हें लगने लगा कि वे अकेले नहीं हैं, उनके साथ उनका भगवान सहायक बनकर चल रहा है। भक्त धन्ना जी की मन:प्रसन्नता व मन:सुख का कोई परावार न था। कुछ दिन बीते तो ब्राह्मण, जिसने भक्त धन्ना जी को 'ठाकुर' कह कर एक सामान्य पत्थर दिया था, भक्त जी के घर के सामने से निकला। भक्त जी ने उसे आदर से अंदर बुलाया, उसका बहुत आभार व्यक्त किया और पीने के लिये छाछ देते हुए कहा कि "यह छाछ आपके लिए मेरे भगवान ने बनाई है।" वो ब्राह्मण आश्चर्य से भर गया। उसने देखा कि भक्त धन्ना जी के चेहरे पर अजब-सी आभा थी, मुस्कान थी। अब भक्त धन्ना जी 'अक्खड़ किसान' नहीं, भोलेभाव वाले एक सर्वसम्पन्न पुरुष दिखाई दे रहे थे। मन ही मन वो लज्जित भी था कि "मैं तो जिंदगी भर कर्मकांडी ही बना रहा, सारी कमाई तो भक्त 'धन्ना' जी कर गए और वास्तव में 'भक्त' बन गए। वाकई लोग सत्य कहते हैं कि भक्त धन्ना जी ने पत्थर में से भगवान को पा लिया है।"

भक्त धन्ना जी का प्रत्यक्ष परमात्मा से मेल कोई संयोग नहीं था, यह उनके मन की निर्मलता का परिणाम था, क्योंकि उनके मन में परमात्मा पहले से ही बसा हुआ था। बस, उसे जानने, पहचानने, पाने के लिए अपना आप त्याग कर 'तू ही तू' की ध्वनि अलापनी पड़ती है। सीधा-सादा-सा किसान भी भक्त बन गया :

इह बिधि सुनि कै जाटरो उठि भगती लागा ॥
मिले प्रतखि गुसाईआ धंना वडभागा ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८८)

मन में परमात्मा के प्रति प्रेम, श्रद्धा और विश्वास हो तो कण-कण में परमात्मा के दर्शन हो जाते हैं। परमात्मा स्वयं आगे होकर अपने भक्त की लाज रखता है और उसकी मनोकामना पूरी करता है। भक्त धन्ना जी के मन में मर्यादा थी कि परमात्मा को भोग लगा कर ही उन्हें भोजन करना है। इसके लिये वे तीन दिन तक भूखे-प्यासे रहे किन्तु अपने निश्चय पर अडिग रहे। श्री गुरु अरजन साहिब ने कहा है कि भक्त धन्ना जी अति सौभाग्यशाली थे जिन्हें परमात्मा ने दर्शन दिये थे। भक्ति मन की अवस्था है। इसे प्रत्यक्ष दर्शन के बाद भक्त धन्ना जी ने भी माना और संसार को भी इसके लिये प्रेरित किया। गुरमति का दर्शन मन से सिद्धि प्राप्त करने का है— ". . . मनि जीतै जगु जीतु ॥" मन यदि परमात्मा की मर्यादा के

अंदर है, उसे पूर्ण समर्पित हो गया है तो जीवन का लक्ष्य प्राप्त होना सरल हो जाता है। जब परमात्मा कृपा करता है तो जीवन सिद्ध हो जाता है, सरलता फलीभूत होती है— "मनु बसि आवै नानका जे पूरन किरपा होइ॥" भक्त धन्ना जी पर परमात्मा की कृपा हुई और उनकी सरलता ने उन्हें दिव्य ज्योति बना दिया। परमात्मा से मेल के बाद उनका सारा जीवन मन की साधना करने और मानव समाज को परमात्मा के साथ जोड़ने में लगा। भक्त धन्ना जी ने परमात्मा को मन में प्रकट करने का रहस्य जान लिया था, इसलिये वे जनसमाज को प्रेम-भक्ति हेतु प्रेरित करते रहे :

गिआन प्रवेसु गुरहि धनु दीआ धिआनु मानु मन एक मए॥

प्रेम भगति मानी सुखु जानिआ त्रिपति अघाने मुकति भए॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८७)

भक्त धन्ना जी ने कहा कि मनुष्य अनेकानेक योनियों में भटकता रहता है, किन्तु उसका मन फिर भी स्थिर नहीं होता अर्थात् वह आवागमन के चक्र के दुख सहने के बाद भी कोई सीख नहीं लेता। माया, विकारों में लिप्त रह कर वह परमात्मा को विस्मृत कर देता है। उसे माया का विष मीठा लगता है और वह सच व झूठ का अंतर नहीं कर पाता। गुरु, परमात्मा से विमुख होकर वह संसार के मोह में फंसा रहता है, जिससे आवागमन से मुक्त नहीं हो पाता। परमात्मा अति निकट है, मन में ही है, किन्तु वह जान नहीं पाता और जीवन व्यर्थ कर संसार से विदा हो जाता है। भक्त धन्ना जी ने कहा कि परमात्मा का ज्ञान गुरु से ही प्राप्त होता है। जिसने यह ज्ञान धारण कर लिया, वह मन को साध कर परमात्मा में रम जाता है, स्वयं और परमात्मा के मध्य के अंतर को मिटा देता है। जब मन में परमात्मा के लिये प्रेम जाग्रत हो जाता है, तब सच्चा सुख और संतोष प्राप्त होता है। यही जीवन-मुक्त होने का मार्ग है। यही तो आनंद-प्राप्ति की अवस्था है :

जोति समाइ समानी जा कै अछली प्रभु पहिचानिआ॥

धंनै धनु पाइआ धरणीधरु मिलि जन संत समानिआ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८७)

मन परमात्मा के प्रेम में रंग जाये तभी परमात्मा के स्वरूप, उसकी महिमा का ज्ञान होता है। भक्त धन्ना जी ने इसके लिये साधसंगत करने की प्रेरणा भी की। साधसंगत में की गई भक्ति परमात्मा से मेल में सहायक होती है। भक्त धन्ना जी जानते थे कि माया के भ्रम में फंसा मनुष्य सत्य को देख नहीं पा रहा है। उन्होंने भ्रम तोड़ने के लिये तर्क का सहारा लिया।

जननी केरे उदर उदक महि पिंडु कीआ दस दुआरा॥

देइ अहारु अगनि महि राखै ऐसा खसमु हमारा॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८८)

माता के गर्भ में दस द्वारों के मध्य जीव की

रचना केवल परमात्मा ही कर सकता है। वही है जो माता के गर्भ में भी जीव को आहार पहुंचा रहा है और उसे जीवन दे रहा है। ऐसा केवल परमात्मा ही कर सकता है।

इसके बाद परमात्मा के सामर्थ्य और शक्ति के लिये भक्त धन्ना जी ने दो उदाहरण अपनी बाणी में और दिये। उन्होंने पहला उदाहरण कछुए का दिया जो स्वयं तो पानी में रहता है किन्तु उसके प्रजनन किये हुए अंडे पानी के बाहर होते हैं। कछुआ न तो अपने अण्डों को अपने पंखों की सुरक्षा दे सकता है और न उन्हें आहार दे सकता है, न दूध आदि पिला सकता है। फिर भी वे जीवित रहते हैं, क्योंकि परमात्मा उनकी रक्षा और पोषण का प्रबंध करता है। दूसरा उदाहरण भक्त धन्ना जी ने पत्थरों के भीतर पलने वाले कीट का दिया। उसका आहार भी परमात्मा पहुंचाता है और वह कीट जीवित रहता है। परमात्मा की महिमा अद्भुत है :

कुंमी जल माहि तन तिसु बाहरि पंख खीरु तिन नाही॥

पूरन परमानंद मनोहर समझि देखु मन माही॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८८)

भक्त धन्ना जी ने कहा कि परमात्मा एक सम्पूर्ण शक्ति है। वह ऐसी सम्पूर्ण शक्ति है जो परम आनंद प्रदान करने वाली है और मन को मोहित कर लेने वाली है। मनुष्य यह समझे कि केवल परमात्मा की भक्ति से ही आनंद प्राप्त होना है और जीवन सार्थक होना है। परमात्मा के साथ जुड़ कर सारे भय दूर हो जाते हैं, क्योंकि सर्वसमर्थ परमात्मा स्वयं उद्धार करता है— *"कहै धंना पूरन ताहू को मत रे जीअ डरांही॥"*

भक्त धन्ना जी ने कहा कि परमात्मा अपार दयालु है। उसकी कृपा अपने जन पर सदैव बरसती रहती है। वह सदैव अपने जन के हित पूरे करने को तत्पर रहता है।

गोपाल तेरा आरता॥

जो जन तुमरी भगति करंते तिन के काज सवारता॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६९५)

मनुष्य को सदैव परमात्मा के समक्ष याचक बन कर रहना चाहिये। उसकी कृपा होती है तभी मनुष्य प्रेम-भाव धारण करता है, मन परमात्मा में टिकता है और उसका ध्यान लगता है। भक्त धन्ना जी ने कहा कि परमात्मा अपने भक्त के सारे कार्य पूरे करता है, उसे कभी निराश नहीं होने देता। वह ऐसा कृपालु है कि अपने भक्त की आत्मिक ही नहीं सांसारिक आवश्यकताओं का भी ध्यान रखता है। जीवन उसने दिया है, जीवन को सुचारू ढंग से चलाने का प्रबंध भी वही करता है। मनुष्य अपने निर्बाध और सहज जीवन के लिये भी उसके समक्ष प्रार्थना करे। तभी तो वह चिंतारहित होकर भक्ति कर सकेगा। भक्त धन्ना जी ने अपने उपरोक्त शबद में परमात्मा से दाल, आटा, घी, जूती, कपड़े, उत्तम अन्न, दुधारू गाय, आने-जाने के लिये तीज घोड़ी ही नहीं माँगी, एक ऐसी सुशील

सुयोग्य पत्नी भी मांग ली जो घर को भली-भांति संभाल सके। ये मांगें उस भावना की श्रेष्ठता की प्रतीक हैं जिसे मनुष्य को परमात्मा के प्रति मन में धारण करना चाहिये। ऐसी भावना तब प्रकट होती है जब मनुष्य और परमात्मा के मध्य कोई भेद नहीं रह जाता। मनुष्य परमात्मा को ही अपना पिता, माता, सखा, बंधु, कर्ता, दाता, प्रतिपालक मान लेता है और अपना पूरा जीवन उसके बल को आधार बना कर टिका देता है। उससे वह एक बालक की तरह, एक सखा, बंधु की तरह सारी आशायें रखता है। परमात्मा उसकी हर आशा पूरी भी करता है। भक्त धन्ना जी ने एक बालक की तरह हठ किया तो परमात्मा ने स्वयं उनके हृदय-घर में प्रकट होकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और उन्हें सर्व प्रकार से इच्छा-रहित महासंतोषी कर दिया।

भक्त धन्ना जी परमात्मा की भक्ति और प्रेरक उपदेशों से अनगिनत लोगों की श्रद्धा और भावना के केंद्र बन गये। उनका अनुसरण कर लोगों का उद्धार होने लगा। ऐसे महापुरुष सदा के लिये श्रद्धा और प्रेरणा का स्रोत बन जाते हैं। उनकी बाणी का शब्द नित्य गुरु-घर में 'आरती' गायन करते हुए गाया जाता है।

फार्म-४, नियम-८

१. प्रकाशित करने का स्थान	:	कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब
२. प्रकाशित करने का समय	:	प्रत्येक माह की सात तारीख
३. मुद्रक का नाम	:	स. प्रताप सिंघ
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब
४. प्रकाशक का नाम	:	स. बलविंदर सिंघ
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब
५. संपादक का नाम	:	स. सतविंदर सिंघ
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	संपादक, गुरमत ज्ञान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब
६. मालिक	:	शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब

मैं सतविंदर सिंघ घोषणा करता हूं कि उपरोक्त विवरण मेरी जानकारी के अनुसार पूर्णतः सही है।
तारीख-०७/०४/२०२६

हस्ताक्षर/-
(सतविंदर सिंघ)
संपादक, गुरमत ज्ञान।

'ख़ालसा'

–भाई वीर सिंघ (दिवंगत)

'श्री अनंदपुर साहिब' का ठिकाना है। दीवान सज रहा है। कड़ाह प्रसाद तैयार है। गिर्द संगत बैठी है। दिल-शाद (श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी) आए। पाँच जीवन-मुक्त साथ आए हैं। आकर सिंहासन पर सज गए। आहा! आज क्या स्वरूप है? श्वेत दसतार और जामा है। श्वेत कमरबंद है और कमरबंद में सिरीसाहिब है। यही लिबास साथी सज्जनों का है, जो शीश भेंट करने हेतु जाहिर हुए है। आप सिंहासन पर बैठ गए। अपने आगे एक सफ़ेद चमकता सर्वलोह का बाटा (बड़ा बर्तन) रख लिया। इसमें आपका खंडा चलने लगा। आपने बाणी पढ़नी शुरू की। 'पांच प्यारे' अति प्रेम में एकाग्र खड़े हैं। आपका हुक्म पाकर 'वाहिगुरु नाम' का जाप कर रहे हैं। संगत मूर्ति के समान स्थिर खड़ी देख रही है कि आज पता नहीं क्या होने वाला है। जब सतिगुरु अपनी बाणी पढ़ चुके तब 'पाँचों' को वो, जो तैयार किया था, जिसे सतिगुरु ने 'अमृत' कहा, छकाया। आँखों पर छींटे मारे। केशों में दसम द्वार के ठिकाने पर भी डाला। हर बार मूल-मंत्र का जाप करवाया। हर बार गर्ज कर कहा और कहलवाया :

"वाहिगुरु जी का खालसा ॥
वाहिगुरु जी की फ़तह ॥"

अब 'पाँचों' को सतिगुरु जी ने कहा— "आप लोग अब 'मैं' हो और 'मैं' हूँ 'आप लोग' आप हो 'खालसा'!" अब सतिगुरु प्यारी पराक्रमी सूरत लिए सिंहासन पर खड़े हो गए और ललकार कर आवाज़ दी— "खंडा प्रिथमै साज कै जिन सभ सैसारु उपाइआ ॥ उसका ध्यान धरो!

मृत्यु पहले बनी, बाद में शरीर! मृत्यु अवश्य आयेगी एक दिन! मत डरो मौत से! सदा तैयार रहो मृत्यु के लिए! मगर देखो! 'खालसा' आपके अंदर मैं प्रवेश कराता हूँ! 'खालसा' जिंदा आदर्श निशाना है! 'खालसा' करिश्मा है, जो तन में रूह को भरता है! 'खालसा' एक निशान है, जिस पर आपने शहीद होना है और सब कुछ कुर्बान करना है! 'ख़ालसा' मेरे अंदर से जन्मा है और आपके अंदर गया है! मैंने अर्श से 'खालसा' लाकर आपके अंदर प्रविष्ट किया है।"

"हाँ जगत! देख तेरा भार हरने हेतु मैं अजल से गुरु, आदि से गुरु-सृजक का पुत्र होकर चेला बनता हूँ, सिक्ख बनता हूँ, ताकि 'खालसा' मेरे अंदर-बाहर के रास्ते भी प्रवेश करे और मैं भी होऊँ 'खालसा'! उसी तरह, जैसे मैंने किया है आपको . . . !"

यह गरजती सदा देते ही आप सिंहासन पर से छलांग लगा कर उतरे और नीचे खड़े हो गए। 'पाँच प्यारों' से कहा— "आप हो 'खालसा!' खालसा जी! अब मेरे में आप लोग 'खालसा' बसायो, 'अमृत' के रास्ते!"

पहले तो 'पाँच प्यारे' थर्राए, लेकिन फिर :

काठ की पुतरी कहा करै बपुरी खिलावनहारो जानै॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २०६)

'पाँच प्यारे' वहाँ पर उसी तरह 'अमृत' तैयार करने लगे। 'अमृत' तैयार कर दाता को दान किया और कहा :

तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा तुही चवर ढोलारे॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६९४)

देखो! गुरु-अवतार, गुरुयों का गुरु, अज़ल का गुरु बन गया 'खालसा'।

इसी समय एक ध्वनि उठी संगत में से— "गुरु . . . चेला और चेला . . . गुरु . . . !"

'खालसा' सज़ा कर गुरु सिंहासन पर बैठ गए। फिर 'पाँचों से कहा— "भाई दया सिंघ! भाई धरम सिंघ! भाई हिम्मत सिंघ! भाई मुहकम सिंघ! भाई साहिब सिंघ! संगत में ऊँचे खड़े होकर दर्शन दो और कहो, 'खालसा' अर्श से आ गया है! आज हो गया है 'ख़ालसे' का जन्म! गर्ज कर बोलो— वाहिगुरु जी का खालसा॥ वाहिगुरु जी की फ़तह॥" "कह दो, यह 'खालसा' 'सरम खँड' से वाहिगुरु का भेजा हुआ है। 'फ़तह' सदा वाहिगुरु की है। अतएव 'फतह' और 'खालसा' दोनों वाहिगुरु के हुए। एक ही मालिक के होने के कारण, एक ही देश के होने के कारण 'फतह' और 'खालसा' इकट्ठे ही विचरण करेंगे!"

कविता

सच्चाई पर रखो भरोसा

–श्री प्रशांत अग्रवाल*

जग हंसता है हंसने दो!
जो कहता है कहने दो!
सच्चाई पर रखो भरोसा,
कदम कभी न डिगने दो!
आना-जाना लगा रहेगा!
खोना-पाना लगा रहेगा!
सत्यमार्ग है चिरस्थायी,
सदा रहा है, सदा रहेगा!
दुनिया देगी तर्क सुहाने!
मन लायेगा कई बहाने!
मत फंसना झूठे झांसों में,
तुमको ऊंचे लक्ष्य हैं पाने!
तन की भूख मिटाते हो!
लगी प्यास बुझाते हो!
भूखी-प्यासी रहे आत्मा,
क्यों न 'उसे' ध्याते हो?
वक्त कीमती बहुत गंवाया!
यहीं रहेगा जो भी पाया!
कुछ तो ऐसा करके जाओ,
रहे साथ में 'ठंडी छाया'!
दुर्गुण बाहर करते रहना!
सद्गुण अंदर भरते रहना!
सार भरा इन दो बातों में,
सदा इन्हीं पर चलते रहना!

**४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली (उ. प्र.)—२४३००३; फोन : ९४११६-०७६७२*

बैसाखी से खालसा-सृजना दिवस

*–डॉ. गुरमीत सिंघ**

१७५६ बिक्रमी की बैसाखी वाले दिन श्री अनंदपुर साहिब में सिक्खों के दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा की सृजना कर इस दिन के महत्व को और बढ़ा दिया। बैसाखी अब केवल मौसमी त्यौहार नहीं बल्कि यह ख़ालसे का सृजना दिवस है। इसी कारण दुनिया भर में बसते सिक्ख इस दिवस को श्रद्धा और शान के साथ मनाते हैं। इस दिन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज ने खालसा पंथ की सृजना की।

खालसा गुरु-रूप होने के कारण न्यारा है। गुरु के समक्ष पूर्ण रूप से समर्पित होकर ख़ालसा ने गुरु के साथ सीधा संपर्क स्थापित किया है। ख़ालसा की सृजना कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने गुरु और शिष्य के दरमियान स्थापित परंपरागत दूरी को ख़त्म कर दिया। इस दूरी को खत्म करने का सैद्धांतिक आधार श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दिया गया है। गुरबाणी मानव और परमात्मा के आपसी रिश्ते के मध्य स्थापित रूहानी दरार और दूरियों को मिटाती है :

ठाकुर महि दासु दास महि सोइ॥
जह देखा तह अवरु न कोइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६८६)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्खी सिद्धांतों को अमल में लाते हुए यह स्पष्ट किया है :

ख़ालसा मेरो रूप है ख़ास।
ख़ालसे महि हउं करउं निवास।

(श्री सरबलोह ग्रंथ)

खालसा अपना आप गुरु के समक्ष समर्पित करने के बाद गुरु-रूप होता है। इस अवस्था में उसे मृत्यु का भय नहीं रहता, क्योंकि खालसा निर्भय और निर्वैर होता है। सिक्खों के व्यवहारिक जीवन में से पूर्ण रूप से मृत्यु का भय ख़त्म करने के लिए ही खालसा की सृजना की गई है। गुरबाणी के माध्यम से श्री गुरु नानक साहिब ने पहले से ही यह स्पष्ट किया हुआ है कि प्रभु-प्रेम-मार्ग (सिक्खी) का पथिक बनने वाले अपना शीश हथेली पर रख कर सामने आएं :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै॥
सिरु दीजै काणि न कीजै॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४१२)

प्रेम के इस मार्ग पर चलने के लिए गुरु नानक साहिब आत्मबलिदान करने के लिए प्रेरित करते हैं। अमृत छकाने (खालसा सजाने) से पूर्व श्री गुरु

* *प्रोफेसर-इंचार्ज, गुरु गोबिंद सिंघ चेयर, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला- १४७००२; फोन : ९८१४५-९०६९९*

गोबिंद सिंघ जी ने सिक्खों के विशाल समूह में से बारी-बारी से पाँच सिरों की माँग की थी। एकत्र सिक्खों में से एक-एक कर पाँच जन उठे और गुरु-चरणों में भेंट हो गए। सिक्ख धर्म के इतिहास में यह घटना नई नहीं थी, बल्कि पहले से चली आ रही परंपरा का उच्चतम पड़ाव था। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने इस उम्मीद पर प्रवान चढ़ कर सिक्खों का मार्गदर्शन किया। इसी श्रृंखला में श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत सिक्खों को कुर्बानी का सबक सिखाती है। श्री गुरु नानक साहिब यदि 'सिर' माँग रहे हैं तो उनके ज्योति-स्वरूप गुरु 'सिर' दे रहे हैं। सिर कैसे भेंट किया जाता है? इस प्रश्न का उत्तर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जीवन-चरित्र है। उन्होंने छोटी आयु में ही शहादत के आध्यात्मिक रहस्य समझ लिए थे। ख़ालसा की सृजना करते समय उन्होंने पंथ को जिस मकसद के लिए तैयार किया था उस मकसद की पूर्ति के लिए इनके परिवार ने शहादत का सफ़र तय किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने चमकौर की गढ़ी में अपने पुत्रों को जंग में जाने व शहीद होने के लिए स्वयं तैयार किया। धर्म के लिए कुर्बान होने का जो संदेश श्री गुरु नानक साहिब ने बाणी के माध्यम से दिया था उसे व्यावहारिक रूप में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने लागू किया और गुरु जी के आस्थावान पुत्रों ने धर्म को अपनी जान से कीमती समझ कर सिक्खी की शान और पहचान की रक्षा की है। गुरबाणी में ज़िंदगी और मृत्यु के अर्थों को समझाया गया है। इन अर्थों के मुताबिक धर्म के लिए ज़िंदगी के क्या अर्थ हो सकते हैं? इस सम्बंध में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने व्याहारिक स्तर पर इन अर्थों को समझाया है।

गुरु-ज्योति के जीवंत नेतृत्व में सिक्खों ने अपने विश्वास और व्यावहारिक जीवन में गुरु के हुक्म में रहने का ढंग सीखा है। मानव-जीवन के व्यवहार में जहाँ कहीं भी रूढ़िवादिता सामने आई तो गुरु साहिबान ने ख़ुद नेतृत्व कर उनका बदल पेश किया और सिक्ख-रहित के हर पक्ष को नये सिरे से योजनाबद्ध व सृजित किया। ख़ालसा की सृजना के अवसर पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ख़ालसा को 'पाँच निशानियाँ' (पाँच ककार) प्रदान कर नवाजा, जो खालसाई रहित का अभिन्न अंग हैं। इस नई सृजना का उच्चतम पड़ाव सिक्खी का खालसाई रूप है, जिससे सिक्ख पहचान के नक्श और ज्यादा स्पष्ट रूप से संसार के सामने आए हैं। सिक्खी की खालसाई पहचान द्वारा गुरु-सिद्धांतों और गुरु-अमल को बरकरार रखने में सिक्ख सफल सिद्ध हो रहे हैं। अब सिक्खी को कोई और पहचान अपनी पकड़ में नहीं ले सकती। सिक्खी की खालसाई पहचान पूर्व स्थापित पहचानों की नज़र में रोड़ा समझी जाने लगी, इसलिए सिक्खों को अपनी पहचान बनाए रखने के लिए बड़ी कठिन और विनाशकारी परिस्थितियों के दौर में से गुज़रना पड़ा है। बाबा बंदा सिंघ बहादुर तथा उनके साथियों की शहादत के बाद भयानक दौर में सिक्खी स्वरूप ने

सिक्खी पहचान को बचाने में ऐतिहासिक योगदान दिया है। सिक्खी स्वरूप के बिना ऐसे हालात में सिक्खी के निशानों और चिह्नों को पहचानना मुश्किल हो जाना था। सिक्खी की ख़ालसाई पहचान का नतीजा है कि आज सिक्ख दुनिया भर में चढ़दी कला (प्रसन्न मुद्रा) में रह रहे हैं और ख़ालसा पंथ के निशान संसार भर में झूल रहे हैं।

सिक्खी की खालसाई पहचान के स्थापित हो जाने के पश्चात् अगला पड़ाव श्री गुरु ग्रंथ साहिब का गुरु-रूप में पेश होना है। गुरु-ज्योति के अमल की संपूर्णता होने पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सब सिक्खों को यह आदेश दिया कि वे श्री गुरु ग्रंथ साहिब को अपना गुरु मानें। उस समय से गुरु-वचनों पर चलता सिक्ख पंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब से खुशियाँ प्राप्त कर रहा है। सिक्खों की आध्यात्मिक पहचान का केंद्र श्री गुरु ग्रंथ साहिब हैं, जिसकी ओट से सिक्ख अपनी विलक्षणता बरकरार रखने में कामयाब हुए हैं। आध्यात्मिक जीवन में विलक्षण पहचान के साथ-साथ व्यावहारिक जीवन में सिक्ख रहित ने सामाजिक व सांस्कृतिक क्षेत्र में सिक्खों की अलग पहचान बनाने में भूमिका अदा की है।

भाई गुरदास जी बताते हैं कि सिक्ख-चिंतन और सिक्खी-अमल 'नाम' पर केंद्रित है। उनके अनुसार श्री गुरु नानक साहिब को जब सिद्धों ने करामात दिखाने के लिए कहा तो श्री गुरु नानक साहिब ने यह उत्तर दिया था— "बाझो सचे नाम दे होरु करामाति असां ते नाही।" 'नाम' के सिद्धांत द्वारा श्री गुरु नानक साहिब ने 'गुरमुख' की सृजना की है, जो सिक्ख पहचान का स्वरूप है। 'गुरमुख' का जीवन 'सतिनामु' से सम्बन्धित है। गुरु द्वारा सृजित मनुष्य (गुरमुख) सच्ची रहित के कारण अन्य की अपेक्षा विलक्षण है। गुरमुखों की संगत, साधसंग को भाई गुरदास जी सच्चे पंथ (वार २९, पउड़ी ९) के रूप में देखते हैं। जो मानव (गुरमुख) अपने वजूद की वास्तविकता को समझ लेता है। वह अहं पर काबू पा लेता है और सच्ची रहित के साथ जीवन-मुक्त होकर आनंद प्राप्त कर लेता है। सत्य-मार्ग के लिए केवल सच्चे विचार या सिद्धांत ही काफ़ी नहीं हैं, मानव को अपने वचनों के साथ-साथ कर्मों के द्वारा भी धर्म कमाना चाहिए, जिसके लिए मानव को शब्द-गुरु का ओट- आसरा लेना चाहिए। 'गुरमुख' इसके सहारे जीवन व्यतीत करते हैं। गुरु का ओट-आसरा सिक्ख पहचान को जीवित रख रहा है।

सिक्ख इसलिए भाग्यशाली हैं कि गुरु सिक्खों के अंग-संग है। पैग़म्बरी धर्म (यहूदी, ईसाई और इसलाम) परमसत्ता के पवित्र संदेश को मानते हैं, जबकि पूरबी एशिया के प्राचीन लोग देवी-देवताओं की पूजा में विश्वास रखते थे। श्री गुरु नानक साहिब ने संसार में प्रचलित परंपराओं से विलक्षण गुरु-परंपरा का आरंभ किया है। गुरबाणी 'इलहाम' है, 'धुर की बाणी' है। इस सम्बन्ध में वे अपना ख़ुद का अनुभव बयान करते हैं :

बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार॥

जिनि माणस ते देवते कीए करत न लागी वार॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४६२)

गुरु मनुष्य को देवता बनाता है। देवता यहाँ पूजनीय सत्ता नहीं, बल्कि यह धार्मिक अर्थात् सत्य होने का प्रतीक है। यह देवता खालसा है। गुरु के प्रति समर्पित खालसा अपने मूल की पहचान करने के पश्चात् गुरु-बख़्शिश पा लेता है। इस अनुभव में शामिल मनुष्य हमेशा चढ़दी कला में रहता है। आम जीवन में लोग अपनी तुच्छ-सी प्राप्तियों के लिए अहं का शिकार हो जाते हैं, जबकि गुरु-बख़्शिश में ख़ालसा अपनी हर फतह को गुरु की फतह मानता है। गुरु साहिब द्वारा प्रदत्त फतह ख़ालसा को हर प्रकार के विकारों से मुक्त करती है। आज संसार में कौमें अपनी हदों के लिए एक-दूसरे के साथ लड़ती हैं। अलग-अलग कौमों के लोगों ने छोटे हितों के लिए छोटे नारे बनाए हुए हैं। जबकि "वाहिगुरु जी का ख़ालसा॥ वाहिगुरु जी की फतह॥" का जयकारा खालसा को उसके मूल के साथ जोड़ता है, जो सबका साझा है।

खालसा गुरु-अमल में पूर्ण होकर गुरु-रूप बन जाता है। चमकौर साहिब की फ़ैसलाकुन जंग में ख़ालसा के आदेश की पालना कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इस सिद्धांत को जगज़ाहिर कर देते हैं। इसी लड़ी में वे श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु मानने का आदेश देकर श्री गुरु नानक देव जी के 'शब्द-गुरु के सिद्धांत' को युगो-युग अटल गुरु का दर्जा देते हैं। इस प्रकार श्री गुरु नानक साहिब से श्री गुरु ग्रंथ साहिब तक का गुरु-अमल सिक्ख पहचान के विकास का दौर है। इस निरंतरता में सिक्ख संस्थाओं तथा सिक्खी ने अपने विकास की मंजिलें तय की हैं।

सिक्ख पंथ के निर्माण के लिए श्री गुरु नानक साहिब ने अपना उद्देश्य आरंभ से ही स्पष्ट कर दिया था। उस समय नये मुक्ति-माडल की आवश्यकता थी और गुरु जी ने नाम से वचनबद्ध पवित्र भाईचारे के निर्माण का लक्ष्य पेश किया था, जिसे स्वीकार कर लोगों ने सदियों पुरानी परंपराओं को नये संस्कारों में पलट दिया था। इस नये विश्वास के गिर्द नये सिक्ख सभ्याचार की सृजना हुई है। श्री गुरु नानक साहिब के समय से ही सिक्ख गुरबाणी का गायन करने के लिए संगत रूप में इकठ्ठा होना शुरू हो गए थे। संगत का बिना किसी भेदभाव या ऊँच-नीच से मिलकर बैठना सिक्ख पंथ की भाईचारक और न्यारी एकता का आधार है, जिससे खालसा पंथ सजा है।

गुरसिक्खों को बताई रहित में गुरु के उपदेश को हर पल याद रखने और इसे जीवन में लागू करने के लिए कहा गया है। गुरु के नाम को जपने के साथ-साथ गुरु-दर्शन की अभिलाषा ने गुरु के सिक्खों को इकठ्ठा हुई का आधार मुहैया करवाया है। गुरु-दर्शन और गुरु-विचार के लिए इकट्ठी हुई सिक्ख संगत को एकजुट रखने के लिए सिक्ख रहित विकसित हुई है। सिक्खों के मन में गुरु-दर्शन के लिए पैदा हुई चाह को पेश करते हुए श्री गुरु रामदास जी फरमान करते हैं कि प्रभु के दर्शन के

बिना नैनों में नींद नहीं आती, यहाँ तक कि शरीर के सबसे बारीक अंग केशों (रोम) व सूक्ष्म अंगों, जैसे हृदय में प्रभु से वियोग की तड़प महसूस होती है :

रोमि रोमि मनि तनि इक बेदन मै प्रभ देखे बिनु नीद न पईआ॥

बैदक नाटिक देखि भुलाने मै हिरदै मनि तनि प्रेम पीर लगईआ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८३६)

सिक्खों में गुरु-दर्शन के लिए तीव्र इच्छा का प्रदर्शन श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी में इस प्रकार मिलता है :

मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई॥

बिलप करे चात्रिक की निआई॥

त्रिखा न उतरै सांति न आवै बिनु दरसन संत पिआरे जीउ॥१॥

हउ घोली जीउ घोलि घुमाई गुर दरसन संत पिआरे जीउ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९६)

गुरु-दर्शन सिक्ख परंपरा और सिक्ख-रहित का एक ऐसा महत्वपूर्ण पहलू है जिसे हम सिक्ख-जीवन का केंद्र भी कह सकते हैं। भाई लहिणा जी के मन में श्री गुरु नानक साहिब के दर्शन के लिए पैदा हुई चाह और गुरु-मिलाप से श्री गुरु अंगद देव जी बनने के सफ़र में भी मुख्य भूमिका गुरु-दर्शन ने निभाई है। भाई लहिणा जी को गुरु-दर्शन से ऐसा प्रकाश हुआ जिससे उनके जीवन में से अंधकार तो दूर हुआ ही, वो ख़ुद भी इस रौशनी की ज्योति बन गए।

सिक्ख जीवन-युक्ति की विलक्षणता का यह सफ़र लगभग दो सदियों से अधिक समय तक चलता रहा है, जिसमें गुरु-प्रेम, गुरु-स्पर्श और गुरु-कृपा द्वारा सिक्ख बख़्शिशें प्राप्त करते आ रहे हैं। सिक्ख-रहित में चरण पाहुल से मिलती ताज़गी सिक्ख भाईचारे की संरचना का आधार बनी, जिससे सिक्ख संगत और संगत से ख़ालसा अस्तित्व में आया है।

खालसाई रहित से पहले चरण पाहुल की रीति सिक्खों को धार्मिक तौर पर इकट्ठा होने का आधार बनी थी, क्योंकि पाहुल लेकर हर कोई बिना किसी भेदभाव से सिक्ख संगत में शामिल हो सकता था। चरण पाहुल की इस परंपरा को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खंडे की पाहुल में बदल कर सिक्ख-रहित को मुकम्मल कर दिया है। वर्तमान समय में सिक्खों में अमृत की परंपरा प्रचलित है। अमृत सिक्खी धारण करने की रस्म ही नहीं, बल्कि सिक्ख-पंथ की निरंतरता की पराकाष्ठा है। यह गुरु-ज्योति और युक्ति का संगम है। इसके द्वारा मानव गुरु के साथ जुड़ जाता है, क्योंकि सिक्खों के लिए गुरु ही एकमात्र सहारा है। सैद्धांतिक और ऐतिहासिक तथ्यों की रोशनी में देखा जाये तो सिक्ख और खालसा-पहचान का सैद्धांतिक आधार एक ही है। हम यह भी कह सकते हैं कि दोनों में किसी प्रकार की विभिन्नता नहीं है, क्योंकि हर सिक्ख अमृत छकने के पश्चात् खालसा बन सकता है और खालसा अपने आप में सिक्ख होता है।

आदर्श मानव की सृजना का स्वरूप : खालसा पंथ

–सतविंदर सिंघ फूलपुर*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा खालसा पंथ की सृजना धरती पर संपूर्ण मानव की संरचना थी, यह 'नानक निर्मल पंथ' की 'खालसा पंथ' के रूप में संपूर्णता थी। खालसा पंथ 'प्रभु का पंथ' था जिसके अनुयाइयों ने धार्मिक जगत में हर प्रकार की मध्यस्थता से मुक्त होकर अकाल पुरख के साथ सीधा सम्बन्ध स्थापित करना था। इस पंथ ने एक अकाल का पुजारी होकर मानवता का नेतृत्व करना था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी 'बचित्र नाटक' में पूर्व के हालात तथा अपने मिशन के बारे में फरमान करते हैं :

पेड पात आपन ते जलै ॥
प्रभ कै पंथ न कोऊ चलै ॥ १५ ॥
जिनि जिनि तनिक सिद्ध को पायो ॥
तिन तिन अपना राहु चलायो ॥. . .
सभ अपनी अपनी उरझाना ॥
पारब्रहम काहू न पछाना ॥. . . २८ ॥६ ॥

तथाकथित धार्मिक नेताओं द्वारा मानवता को पथभ्रष्ट किया जा रहा था। समाज में गिरावट आ चुकी थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को धरती पर भेज कर अकाल पुरख की ऐसा पंथ स्थापित करने की मंशा थी जो जात-पाँत के भेदभाव से ऊपर उठ कर मानवीय भाईचारे की सेवा के लिए तत्पर रहे, जो गुरबाणी में आए 'बेगमपुरा' के संकल्प को धरती पर व्यावहारिक रूप दे सके, जो "मूए बिनु जीवनु नाही" को सत्य कर दिखाए, जो धरती धरमसाल की स्थापना के लिए बुराई का संहार कर सके, दुर्जनों को मार मुकाए, धर्मियों के लिए हर प्रकार का संकट-निवारण कर सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए गुरु साहिब कहते हैं कि अकाल पुरख ने मुझे धरती पर जाकर 'पंथ-स्थापना' करने का हुक्म दिया है :

तप साधत हरि मोहि बुलायो ॥
इम कहि कै इह लोक पठायो ॥२८ ॥. . .
मैं अपना सुत तोहि निवाजा ॥
पंथ प्रचुर करबे कहु साजा ॥
जाहि तहां तै धरमु चलाइ ॥
कबुधि करन ते लोक हटाइ ॥२९ ॥६ ॥

(बचित्र नाटक)

अकाल पुरख के इस मिशन के अंतर्गत कलगीधर पातशाह ने १६९९ ई. की बैसाखी को श्री अनंदपुर साहिब में खालसा पंथ की सृजना की। भारतीय समाज में सदियों से प्रताड़ित लोगों को पहली बार श्री गुरु नानक पातशाह ने गले से

*संपादक, गुरमति प्रकाश और गुरमत ज्ञान। फोन : ९९१४४-१९४८४

लगाया और "जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस" का आदर्श विचार प्रस्तुत किया। इसी विचार को कलगीधर पिता ने :

—नाम गरीब निवाज़ हमारा।
है जग में प्रसिद्ध अपारा।
सो सफल जग मैं तब थै हैं।
लघु जातन को बडपन दै हैं।

(पंथ प्रकाश, कृत ज्ञानी गिआन सिंघ) के माध्यम से कथित जाति-अभिमानी निठल्ले वर्ग को नकार कर, श्रमिक लोगों को पातशाही सौंप कर श्रम-प्रधान तथा स्वस्थ पंथ 'खालसा पंथ' की सृजना की। गुरु जी ने खालसा पंथ की सृजना के समय एक ही बाटे में से सभी को खंडे की पाहुल छका कर जाति-वर्ण के विभाजन को पूरी तरह से ख़त्म कर दिया। दूसरा, पाँच प्यारों से स्वयं खंडे-बाटे की पाहुल लेकर 'गुरु-चेला' के भेद को मिटा कर 'गुरु चेला, चेला गुरु' का न्यारा मॉडल मानवता के सामने पेश किया। गुरु का शिष्य (चेले) में अभेद होना आने वाले समय में किसी बड़ी ज़िम्मेदारी का प्रतीक था। कलगीधर पिता ने "पंथ प्रचुर करबे कहु साजा" वाला मिशन अब विशुद्ध जीवन वाले धर्मपरायण, निर्मल चित्त, कथनी के पूरे, जांबाज संत-सिपाहियों की जत्थेबंदी के हवाले करने का फ़ैसला कर लिया था। खालसा सृजना में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का उद्देश्य ऐसे मनुष्यों की जत्थेबंदी स्थापित करना था जो सिक्खी के आदर्श के अनुसार रूहानी ज़िंदगी में 'संत' हों और सांसारिक जीवन में निष्काम सेवक, जो भले लोगों के रक्षक, सहायक हों और उनके कष्ट-निवारण के लिए दुर्जनों को मारने का यत्न करें, ताकि जनसाधारण अमन-शांति से जीवन बिता सके।

"तिन तिन अपने राह चलाए" वाली सामाजिक गिरावट को सदा के लिए दूर कर अब ख़ालसा ने अपना नेतृत्व खुद करना था और सारी मानवता का नेतृत्व करने के योग्य बनना था। ख़ालसा ने पूरे जनसमाज को अपना समझना था व हर प्रकार की पराधीनता से मुक्त होकर जनसमाज की सुरक्षा के प्रतीक बनना था :

खलक ख़ालसे की सगल भवन चतुर दस मांहि।
खलक दुखावै जो कोई हनै खालसा तांहि।

(गुरकीरत प्रकाश)

इसलिए ख़ालसा की उच्च इख़लाक वाली रहित मर्यादा निर्धारित कर ख़ालसा को धरती का संपूर्ण मानव बनाया गया। इस मंतव्य के लिए सदियों पुरानी ग़ुलामी के बोझ तले दबी व बुज़दिल हो चुकी जनता के अंदर स्वाभिमान जगाने के लिए, उनमें नव-जन्म का एहसास कराने के लिए पिछली कुल-नाश, कर्म-नाश, धर्म-नाश का सिद्धांत पेश किया गया। इसके बाद गुरु जी ने ख़ालसा की नयी मर्यादा स्थापित की। पाँच ककारों— केश, कंघा, कड़ा, कृपाण, कछहिरा को हर समय अंग-संग रखने की ताकीद की। इसने अब तक की धार्मिक भ्रांतियों वहमों-भ्रमों,

बिप्रवादी रीतियों से मुक्त होकर जनसमाज को मुक्त कराना था, तभी खालसा कहलवाना था :

ख़ालस ख़ास कहावै सोई।
जा के हिरदे भरम न होई।
भरम भेख ते रहै निआरा।
सो ख़ालस सतिगुरू हमारा॥

(श्री गुर सोभा)

मानवाधिकारों की रक्षा के लिए गुरु साहिबान द्वारा स्थापित शहादत की परंपरा को भी अब ख़ालसा ने आगे बढ़ाना था, क्योंकि गुरु शिष्य में अभेद हो गया था। ख़ालसा ने यह ज़िम्मेदारी भी बाख़ूबी निभाई। सिक्ख पंथ का कुर्बानियों भरा इतिहास इस बात का गवाह है कि खालसा पंथ ने धर्म, देश, कौम की रक्षा के लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी करने से संकोच नहीं किया।

सदियों पुरानी भारत की ग़ुलामी की जंजीरों को खालसा पंथ ने ही तोड़ा। खालसा पंथ ने विश्व भर में बहादुरी की बहुत-सी मिसालें कायम की हैं। १८९७ ई. में 'सारागढ़ी की जंग' जीतने वाला, १९४८ ई. में कश्मीर की पहाड़ियों पर डटने वाला, १९६२, १९६५ और १९७१ ई. की जंग में देश की गरिमा को बचाने वाला कलगीधर पिता का खालसा पंथ ही था, जिसने अपनी शक्ति प्रत्यक्ष रूप में साबित कर दिखाई।

गत वर्षों में ब्रिटिश ब्राडकास्टिंग कार्पोरेशन द्वारा दुनिया की तीन बहुत ही ख़ास तथा महान स्त्रियों के जारी किये गए नामों में 'माता भाग कौर जी' का नाम विशेष तौर पर दर्ज किया जाना समूचे सिक्ख पंथ के लिए गर्व वाली बात है। यह भी कलगीधर पिता जी की बख़्शिश है जिन्होंने खालसा पंथ सृजित कर सदियों से भारत में कमजोर समझी जाती रही स्त्री वर्ग में आत्माभिमान पैदा कर उसे ज़ुल्म के विरुद्ध संघर्षशील होने के लिए तैयार किया। इस प्रकार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का सजाया खालसा पंथ धरती पर एक तरह का इंकलाब था, जिसने सदियों की कायरता को ख़त्म कर आत्मसम्मान वाला जीवन जीने की जाच सिखायी।

अत: ज़रूरत है, खालसा पंथ का सृजना दिवस मनाते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा निर्धारित खालसाई आदर्श को समझ कर, खंडे-बाटे की पाहुल छक कर करनी-प्रधान जीवन जीते हुए विश्व के सामने आदर्श मिसाल पैदा करने की, ताकि वर्तमान में समूचे विश्व को उस रूहानियत और शान्ति की तरफ ले जाया जा सके जिससे "ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई" वाली भ्रातृ-भावना पैदा हो सके, सब तरह के द्वेष की भावना ख़त्म हो सके, विश्वव्यापक स्तर पर पैदा हो रही चुनौतियों का सामना किया जा सके।

द्वय गुरु साहिबान का चरण-स्पर्श प्राप्त धाम : गुरुद्वारा श्री नानकमता साहिब

*–डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल**

उत्तराखंड राज्य के ऊधम सिंघ नगर ज़िले में सितारगंज नगर से मात्र दस किलोमीटर की दूरी पर स्थित गुरुद्वारा श्री नानकमता साहिब वह पवित्र स्थान है जिसे प्रथम पातशाही श्री गुरु नानक देव जी और छठी पातशाही, मीरी-पीरी के मालिक श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पवित्र चरणों का स्पर्श प्राप्त है। परंपरा के अनुसार अपनी पहली उदासी के दौरान सन् १५०८ ई. (विक्रमी संवत् १५६५) में श्री गुरु नानक देव जी हरिद्वार से होते हुए इस स्थान पर पधारे थे। यह स्थान उस समय एक घना जंगल था। यह क्षेत्र सिद्ध योगियों का था। सिद्ध भंगरनाथ और झंगरनाथ के नेतृत्व में यहां अनेक सिद्धों ने डेरा डाल रखा था, इसलिए यह स्थान उस समय 'गोरखमता' या 'सिद्धमता' कहलाता था।

श्री गुरु नानक देव जी जीवों का उद्धार करते हुए इस स्थान पर पहुंचे। गुरु जी ने यहां सिद्धों के साथ ज्ञान-चर्चा की और उनके प्रश्नों का गुरमति के अनुसार उत्तर देकर उन्हें निरुत्तर कर दिया।

अब इस स्थान पर गुरुद्वारा श्री नानकमता साहिब सुशोभित है। इसके अतिरिक्त यहां के अन्य स्थान, जिन्हें गुरु साहिब की चरण-रज प्राप्त है, वे हैं— पीपल साहिब (पीपल का वृक्ष), गुरुद्वारा भंडारा साहिब, गुरुद्वारा बाउली साहिब, गुरुद्वारा साहिब दुद्ध वाला खूह (दूध वाला कुआं) और गुरुद्वारा साहिब पातशाही छठी।

प्रथम पातशाह का आगमन : गुरुद्वारा प्रबंधक समिति द्वारा प्रकाशित 'संक्षिप्त इतिहास गुरुद्वारा श्री नानकमता साहिब' से प्राप्त विवरण के अनुसार, श्री गुरु नानक देव जी जब यहां पहुंचे तो आप एक विराट पीपल के नीचे आ बिराजे। पीपल लगभग सूखा हुआ था। भाई मरदाना जी रबाब बजाते और गुरु जी मधुर स्वर में बाणी गायन करते। इस आध्यात्मिक संगीत का ऐसा दिव्य प्रभाव पड़ा कि लंबे समय से सूखे हुए पीपल के वृक्ष पर हरी-हरी कोंपलें फूटने लगीं और कुछ ही समय में वह पीपल पूरी तरह से हरा-भरा हो गया।

जब सिद्धों ने पीपल को हरा होते हुए देखा तो वे आश्चर्यचकित रह गये कि यह कोई साधारण मनुष्य नहीं है, जिसके आ बिराजने से पीपल हरा-भरा हो गया है। गुरु साहिब जी की इस आलौकिक शख्सियत को देखकर सिद्धों को बड़ी ईर्ष्या हुई।

**१/३३८ स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना, फोन : ६२३९६-०१६४१*

उन्हें अपना सिंहासन डोलता हुआ प्रतीत हुआ। उन्होंने गुरु जी को नीचा दिखाने के उद्देश्य से अपनी योग-शक्ति द्वारा इस पीपल को उड़ाने का प्रयास किया। पीपल हवा में ऊपर उठने लगा और इसकी जड़ें ज़मीन से बाहर निकलने लगीं।

श्री गुरु नानक देव जी सिद्धों की अभिमान से भरी मंशा जान गये थे, अत: गुरु जी ने अपने हाथ का पंजा लगाकर पीपल को उखड़ने से रोक दिया।

इसी कारण यह पवित्र स्थान 'पंजा साहिब' या 'पीपल साहिब' नाम से प्रसिद्ध हो गया। पहले इस पीपल की जड़ें जमीन से काफी बाहर दिखाई देती थीं, लेकिन अब इसके चारों ओर पक्का चबूतरा बना दिया गया है, फिर भी जड़ें जमीन से काफी बाहर दिखाई देती हैं।

इस पीपल की एक और विशेषता है। यह जड़ से थोड़ा ऊपर दो मोटी-मोटी शाखाओं में बंटा हुआ है। एक शाखा उत्तर की ओर तथा दूसरी शाखा दक्षिण की ओर फैली हुई है। दक्षिण की ओर की शाखाओं पर नए उभरे पत्ते गहरे गुलाबी रंग के होते हैं, जो कुछ दिनों के बाद हरे हो जाते हैं, जबकि उत्तरी शाखा के पत्ते साधारण पीपल की तरह हरे ही रहते हैं। पतझड़ के बाद के पीपल का आधा भाग ही गुलाबी रंग का होता है।

धूनी जलाना : जंगल में ठंड से बचने के लिए धूनी जलानी पड़ती थी। श्री गुरु नानक देव जी ने भाई मरदाना जी को धूनी जलाने के लिए जंगल में से लकड़ी लाने के लिए कहा। गुरु साहिब के आदेश का पालन करते हुए भाई मरदाना जी लकड़ी इकट्ठा करने के लिए जंगल में चले गये। योगी भाई मरदाना जी को जंगल की ओर जाते देख उनके पीछे दौड़े और भाई मरदाना जी से कहा, "यह जंगल हमारा है। यदि आप गोरखनाथ के शिष्य बन जाएं तभी इस जंगल से लकड़ी ले जा सकते हैं!" उन्होंने भाई मरदाना जी से लकड़ियां छीन लीं। भाई मरदाना जी खाली हाथ गुरु जी के पास लौट आये।

गुरु जी ने भाई मरदाना जी से पूछा कि "लकड़ियां क्यों नहीं लाए?" भाई मरदाना जी ने उत्तर दिया कि "योगी बहुत घमंडी हैं। उन्होंने मुझसे लकड़ियां छीन ली हैं।" गुरु जी ने कहा, "अकाल पुरख का नाम जपो! लकड़ियां भी आ जायेंगी!"

भाई वीर सिंघ जी ने 'गुरु नानक चमत्कार' में लिखा है— "एक शिकारी लकड़ियां लेकर आया। वो गुरु जी के पास हाथ जोड़कर बैठ गया और बोला, "आपके पास ठंड से बचने का कोई साधन नहीं है। मैं आपके लिए लकड़ियां लाया हूं।" यह कहकर उसने आग जलाई और चला गया।

भाई मरदाना जी कहने लगे, "महाराज! यह व्यक्ति बहुत भला है।" गुरु साहिब ने कहा कि

"इसके कर्म बहुत अच्छे हैं। इसने सेवा की है। प्रभु इस पर कृपा करेंगे।"

श्री गुरु नानक देव जी के यहां आग जलती देख सिद्धों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि बिना लकड़ियों के इन्होंने आग कैसे जला ली। उनकी ईर्ष्या और भी बढ़ गई।

वर्षा के कारण धूनियां बुझ जाना और सिद्धों का आग मांगने आना : कुदरत का करिश्मा देखिए! उसी रात बहुत तेज हवा चली और जमकर बारिश होने लगी, जिस कारण सिद्धों की सभी धूनियां बुझ गईं, केवल श्री गुरु नानक देव जी की धूनी जलती रही।

सिद्धों ने बड़े प्रयास किए, परंतु प्रयत्न करने पर भी अग्नि नहीं जली। तब सिद्ध योगी हाथ जोड़कर श्री गुरु नानक देव जी के पास आये और बोले— "महाराज! हमें आग दे दीजिए और हमारी भूल को क्षमा कर दीजिए!" गुरु जी ने कहा कि "आप अपनी मुद्रा और खड़ाऊं लेकर आओ और आग ले लो! एक हाथ मुद्रा दो और दूसरे हाथ आग ले लो!" गुरु जी ने भाई मरदाना जी से कहा कि इनसे मुद्रा और खड़ाऊं लेकर इन्हें आग दे दो। भाई मरदाना जी ने गुरु साहिब के आदेश का पालन किया और आग दे दी। यह कौतुक श्री गुरु नानक देव जी ने सिद्धों का अभिमान तोड़ने के लिए रचा था।

अगले दिन सिद्ध इकट्ठे होकर गुरु जी के पास आये और बोले कि "आपके गुरु कौन हैं? आप किसके अनुयायी हैं?"

तेरा कवणु गुरू जिस का तू चेला॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९४२)

गुरु साहिब जी ने कहा कि 'शबद' ही हमारा गुरु है :

सबदु गुरू सुरति धुनि चेला।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९४३)

फिर सिद्धों ने पूछा कि आपने 'उदासी' क्यों धारण की है?

किसु कारणि ग्रिहु तजिओ उदासी॥
किसु कारणि इहु भेखु निवासी॥
किसु वखर के तुम वणजारे॥
किउ करि साथु लंघावहु पारे॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९३९)

गुरु जी ने उत्तर दिया कि हमने गुरमुखों की खोज के लिए 'उदासी' धारण की है :

गुरमुखि खोजत भए उदासी॥
दरसन कै ताई भेख निवासी॥
साच वखर के हम वणजारे॥
नानक गुरमुखि उतरसि पारे॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९३९)

सिद्ध यह सब सुनकर अत्यंत प्रभावित हुए।

फौड़ी गंगा (बाउली साहिब) : सिद्ध गुरु जी से प्रभावित तो हुए परंतु उनके मन का मैल न गया। अगले दिन भाई मरदाना जी सिद्धों से पानी मांगने

गये, तो सिद्धों ने पानी देने से इन्कार करते हुए कहा कि "अपने गुरु से कहो, पानी का प्रबंध करके दे!"

भाई मरदाना जी हताश होकर लौट आये और गुरु जी से सारी व्यथा कही। परंपरा है कि गुरु जी ने भाई मरदाना जी को एक फौड़ी (फावड़ी) देकर उत्तर दिशा की ओर भेजा और कहा, "जहां भी यह फौड़ी ज़मीन पर मारोगे, जलधारा प्रस्फुटित हो जायेगी। वहां से जल ले आना!"

भाई मरदाना जी ने गुरु-आज्ञा का पालन किया और इस प्रकार 'फौड़ी गंगा' प्रकट हुई। अब वहां 'बाउली साहिब' नामक सुंदर धाम सुशोभित है। 'नानक सागर' बांध बनने के कारण यह स्थान सागर में आ गया, तो यहां एक सुंदर बाउली (बावली) का निर्माण कर दिया गया है। इसे एक लंबे पुल के साथ किनारे से जोड़ दिया गया है। श्रद्धालु पुल द्वारा बाउली साहिब पहुंचते हैं और तकरीबन तीस मीटर नीचे उतर कर पवित्र जल को ग्रहण करते हैं।

दूध वाला कुआं : सिद्धों ने एक और चाल चली। एक दिन कुछ सिद्ध-योगी श्री गुरु नानक देव जी के पास आये और हाथ जोड़कर कहने लगे, "महाराज! हमारा अनुरोध है कि आप हमारा तुंबा (बर्तन) दूध से भर दें!"

भाई वीर सिंघ जी लिखते हैं कि श्री गुरु नानक देव जी ने तुंबा कुएं के पानी से भर दिया, जो सतिगुरु जी की कृपा से सिद्धों को दूध नज़र आया। सभी ने जी भर कर दूध पीया। अब इस स्थान पर गुरुद्वारा दूध वाला कुआं (दुद्ध वाला खूह) सुशोभित है।

सिद्धों को भोजन छकाना : एक दिन सिद्धों ने गुरु जी से कहा कि हम बहुत भूखे हैं, हमें भोजन दीजिए! उस समय गुरु साहिब बरगद के एक पेड़ के नीचे बैठे थे। गुरु साहिब ने भाई मरदाना जी को इशारा किया और कहा कि "पेड़ पर चढ़ो और शाखाओं को हिलाओ!" गुरु जी की आज्ञा का पालन करते हुए भाई मरदाना जी ने शाखाएं हिलाईं और बरगद के फल नीचे गिरने लगे, जिन्हें सभी ने खाया। इन फलों में से छत्तीस प्रकार के भोजन का स्वाद आया। सिद्ध हैरान रह गये। अब इस स्थान पर गुरुद्वारा श्री भंडारा साहिब सुशोभित है।

सिद्धों का षड्यंत्र : जब श्री गुरु नानक देव जी की महिमा बढ़ने लगी तो सिद्धों को चिंता होने लगी कि कहीं हमारी मान्यता खत्म न हो जाए। तब सिद्धों ने फिर से मंत्रणा की और एक षड्यंत्र के तहत गड्ढा खोदकर उसमें एक बच्चे को छुपा दिया और ऊपर से धरती को बराबर कर दिया। बच्चे को सिखा दिया कि जब हम पूछें कि तुम किसकी धरती हो तो कहना कि मैं 'गोरख' की धरती हूं।

सिद्ध आये और गुरु साहिब से कहने लगे, "महाराज! इस स्थान को सदियों से 'गोरखमता' कहा जाता है। यह पृथ्वी सिद्धों की है। यहाँ आपके

लिये कोई स्थान नहीं है।" गुरु जी हंसकर बोले, "हे सिद्धो! यह सारी पृथ्वी परमेश्वर की है। आप इसके मालिक कब से बन गए?"

सिद्धो ने उत्तर दिया, "महाराज! धरती को आवाज देकर पूछ लेते हैं, यह किसकी है। जिसके पक्ष में सुनाई देगा, वह यहीं रह जाएगा और दूसरा चला जाएगा!" गुरु जी ने कहा, "ठीक है! हम आपका सुझाव स्वीकार करते हैं।"

सिद्धों ने ऊंची आवाज में पूछा— "हे पृथ्वी! तुम किसकी हो?" धरती से आवाज आई— "मैं गोरख की धरती हूं।" दो बार आवाज लगाने पर धरती से वही आवाज आती रही, क्योंकि गड्ढे के अंदर बैठा वो लड़का बोल रहा था। जब सिद्ध तीसरी बार पूछने लगे कि यह पृथ्वी किसकी है, तो गुरु साहिब ने उन्हें रोक दिया। गुरु साहिब ने कहा कि अब मैं पूछूंगा। जब श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी पवित्र आवाज में पूछा कि यह धरती किसकी है? तब पृथ्वी से आवाज आई— "नानकमता! नानकमता! नानकमता!"

यह कौतुक देख-सुनकर सिद्ध श्री गुरु नानक देव जी के चरणों में गिर पड़े और बार-बार प्रणाम करने लगे। तब से यह स्थान 'गोरखमता' की जगह 'नानकमता' कहलाने लगा :

सरकारी दस्तावेजों में इस स्थान का नाम 'नानकमता' दर्ज है।

बाबा अलमस्त जी की कर्मभूमि : बाबा अलमस्त जी का जन्म १५५३ ई. (संवत् १६१०) में श्रीनगर (कश्मीर) में हुआ था। बाबा अलमस्त जी, बाबा श्रीचंद जी के सेवक थे। जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब करतारपुर से रमदास की ओर जा रहे थे तो रास्ते में गुरु जी को बाबा श्रीचंद जी मिले। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के दर्शन कर बाबा श्रीचंद जी बहुत प्रसन्न हुए। बाबा श्रीचंद जी के चार सेवक थे— अलमस्त, बालू हसन, फूल शाह तथा गौंडा। बाबा श्रीचंद जी ने अपना अंतिम समय निकट आया जानकर उन चारों का हाथ श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को सौंप दिया। गुरु साहिब जी ने बाबा अलमस्त जी को सिक्ख धर्म का प्रचार करने के लिए उत्तर भारत में भेजा। बाबा अलमस्त जी ने श्री नानकमता साहिब को अपनी कर्मभूमि बनाया और यहां बैठकर सिक्ख धर्म का प्रचार करते रहे।

सिद्धों द्वारा पीपल जलाना और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का आगमन : बाबा अलमस्त जी के समय में भी सिद्ध निरंतर षड्यंत्र करते रहते थे। सिद्ध-योगियों ने बाबा अलमस्त जी को इस स्थान से निष्कासित कर दिया और इस स्थान पर कब्जा करने के लिए ऐतिहासिक पीपल साहिब को जला दिया। बाबा अलमस्त जी ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के चरणों में संदेश भेजा कि आप यहां आएं और श्री गुरु नानक साहिब जी के ऐतिहासिक स्थान को सिद्धों से मुक्त कराएं।

समाचार पाते ही श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब कुछ योद्धाओं के साथ इस पवित्र स्थान की ओर चले आए और इस स्थान से लगभग ५ किलोमीटर पहले अपने घोड़ों को बांधने के बाद पैदल ही इस स्थान पर पहुंचे। उनके आगमन की खबर सुनकर और उनके संत-सिपाही रूप को देखकर, सिद्ध तुरंत यहां से भाग खड़े हुए। गुरु साहिब ने जले हुए पीपल के पेड़ की अपने हाथों से सेवा की और केसर को पानी में घोलकर पीपल पर छिड़का, जिससे पीपल फिर से हरा-भरा हो गया।

सिद्ध-योगी यहां से भागकर पीलीभीत के राजा बाज बहादुर के पास गये और शिकायत की कि "एक शस्त्रधारी योद्धा आया है, जिसने हमें वहां से भगाकर हमारे स्थान पर कब्ज़ा कर लिया है। आप हमारी मदद करें!" यह सुनकर राजा बाज बहादुर अपनी सेना के साथ श्री नानकमता साहिब पहुंचा तो आकर क्या देखता है कि ये तो वही महापुरुष हैं, जिन्होंने बावन राजाओं को ग्वालियर किले से आज़ाद करवाया था।

उन बावन राजाओं में राजा बाज बहादुर ख़ुद भी था। राजा बाज बहादुर ने गुरु साहिब के चरणों में प्रणाम किया।

जब सिद्धों ने यह देखा तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि जिस राजा को हम अपनी सहायता के लिये लाये हैं, वह तो गुरु साहिब का भक्त निकला। राजा ने सिद्धों को बताया कि ये वही गुरु साहिब जी हैं, जिन्होंने उसे बावन राजाओं सहित ग्वालियर के किले से आज़ाद कराया था। इन्हीं के कारण ही वह आज यहां मौजूद है।

जिस स्थान पर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब और राजा बाज बहादुर की मुलाकात हुई थी, वहां अब 'गुरुद्वारा पातशाही छठी तपेड़ा' सुशोभित है। यह स्थान गुरुद्वारा नानकमता साहिब से लगभग एक किलोमीटर दूर और तपेड़ा उपक्षेत्र में मौजूद है, जिसका प्रबंधन भी गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री नानकमता साहिब द्वारा किया जाता है।

राजा बाज बहादुर गुरु जी को अपने साथ अपनी रियासत पीलीभीत ले गया। पीलीभीत में जहाँ श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने आसन जमाया, वहां अब गुरुद्वारा साहिब पातशाही छठी सुशोभित है।

नवाब मेंहदी अली खान की श्रद्धा : श्री नानकमता साहिब उस समय नवाब मेहंदी अली खान की रियासत में आता था। एक बार नवाब की बेगम गंभीर रूप से बीमार पड़ गई तो हकीमों ने उसे श्री नानकमता साहिब में रहकर इलाज कराने की सलाह दी। अत: नवाब ने यहां एक जगह तैयार करवाई। बेगम यहां अपना इलाज कराने लगी और बाबा अलमस्त जी तथा अन्य सत्संगियों के साथ संगति करने लगी। बेगम ने बाबा अलमस्त जी को सेवा करते हुए देख उनसे पूछा कि "यह स्थान किसका है?" बाबा अलमस्त जी

ने बताया कि "यह स्थान श्री गुरु नानक साहिब जी का है।" बेगम ने दुआ की कि "मैं स्वस्थ हो जाऊं और मेरे घर संतान उत्पन्न हो!" बेगम लगातार सत्संगति में लगी रही और आख़िरकार न सिर्फ़ उसके घर एक बालक का जन्म हुआ बल्कि उसकी बीमारी भी ठीक हो गई। यह सब देखकर नवाब मेहंदी अली खान बहुत प्रभावित हुआ। उसने श्रद्धावश ४६०० एकड़ जमीन श्री गुरु नानक साहिब के नाम पर दान कर दी। बाद में इसमें से करीब ३९०० एकड़ जमीन नानक सागर बाँध में आ गई। बाक़ी लगभग ७०० एकड़ जमीन पर गुरुद्वारा प्रबंधक समिति द्वारा खेती की जा रही है।

बाबा अलमस्त जी का परलोक गमन : इसके बाद बाबा अलमस्त जी निरंतर सिक्खी का प्रचार करते रहे। १६४३ ई. में श्री नानकमता साहिब की धरती पर ही उनका देहावसान हुआ। जिस स्थान पर बाबा अलमस्त जी ने अपना शरीर त्यागा और जहां उनका अंतिम संस्कार किया गया, वहां उनकी याद में एक सुंदर गुरुद्वारा साहिब शोभित है। बाबा अलमस्त जी ने ढाका, बंगाल में एक बाउली बनवाई थी। उस बाउली की शिला पर 'बाबा अलमस्त जी' और 'श्री नानकमता साहिब' नाम अंकित है।

वर्तमान समय में गुरुद्वारा श्री नानकमता साहिब : यह गुरुधाम लंबे समय तक सिक्ख संगत के पास नहीं था। सितम्बर १९३४ ई. में सिक्ख संगत द्वारा जिला न्यायाधीश, कुमाऊँ मण्डल, नैनीताल में एक मुकद्दमा दायर किया गया। २० अगस्त, १९३५ ई. को जिला जज कुमाऊं मण्डल, नैनीताल ने संगत के पक्ष में अपना फैसला सुनाया और गुरुद्वारा श्री नानकमता साहिब को सिक्ख संगत को सौंप दिया गया। अब इसका प्रबंध एक स्थानीय निर्वाचित समिति के द्वारा किया जाता है।

मनाए जाने वाले पर्व

'बंदी छोड़ दिवस' (दीपावली) इस गुरुधाम पर हर साल बड़ी श्रद्धा व धूमधाम से मनाया जाता है। इस सालाना जोड़ मेले पर देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु आकर संगत करते हैं। प्रत्येक माह अमावस्या के दिन बड़ी संख्या में संगत यहां पर नतमस्तक होने आती है। गुरुपर्व, बैसाखी पर्व होला-महल्ला पर भी दीवान सजाए जाते हैं।

'सलोक सहसक्रिती' के बारे में विचार

–ज्ञानी मोहन सिंघ उरलाना*

'सलोक सहसक्रिती' श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना १३५३-६० पर दर्ज है, जिनमें से प्रथम चार सलोक (श्लोक) प्रथम पातशाह जी के और अगले सरसठ सलोक पंचम पातशाह जी के हैं। 'सलोक सहसक्रिती' के बारे में जानने से पहले 'सहसक्रिती' के बारे में जानना अति आवश्यक है। 'सहसक्रिती' शब्द पढ़ने पर ऐसा महसूस होता है कि यह 'संस्कृत भाषा' हो, जबकि 'संस्कृत' से अभिप्राय है— सम+कृत, जो व्याकरण आदि प्रबंध सहित रची जाये या कह लो कि जो कोशिश कर रची जाये। 'सहसक्रिती' से अभिप्राय— सहजता से रचित रचना, सुविधापूर्वक रचित। 'सहसक्रिती' प्राकृत भाषा कही जा सकती है जो संस्कृत के साथ मिलती-जुलती है। संस्कृत को विद्वानों या पंडितों की भाषा भी कहा गया है, जिसमें अनेक वेद, शास्त्र आदि लिखे गए हैं परन्तु वे आम व्यक्ति की समझ से बाहर हैं। समय अनुसार बोली या भाषा बदलती रही है। पहले संस्कृत बोली जाती थी। कठिन भाषा होने के कारण वह अपना रूप बदलने लगी। पंजाब पर आर्य हमले, यूनानी, शक आदि कौमों के हमले और उनके मेलजोल से संस्कृत भाषा में अनेक पद इनकी भाषा के मिश्रित हो गए। चाहे इस भाषा में बहुलता संस्कृत पदों वाली रही, मगर इस भाषा का नाम 'प्राकृत' पड़ा और यह 'प्राकृत भाषा' आम तौर पर नाटकों आदि में इस्तेमाल की गई। इस 'प्राकृत भाषा' में कई ग्रंथ लिखे गए।

समय-परिवर्तन के बाद जो प्राकृत भाषा का रूप बना और प्राचीन पंजाबी से पहले जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अक्सर इस्तेमाल की गई है, जो सतिगुरु ने 'सहसक्रिती' नाम से लिखी है, वह भाषा साधु-संत इस्तेमाल किया करते थे, जैसे आजकल भी साधु लोग ठेठ पंजाबी भाषा नहीं बोलते। वे अपने लिखने और बोलने में संस्कृत, ब्रजभाषा तथा पंजाबी मिला कर बोलते हैं। इसलिए, इसे 'साध भाषा' कहा जाता है। इसी प्रकार 'सहसक्रिती' को 'साध भाषा' कह लिया जाये तो कोई आश्चर्य नहीं। इसे 'गाथा' भी कहा

** पूर्व ग्रंथी, श्री अकाल तख़्त साहिब, श्री अमृतसर साहिब।*

जाता है।

विभिन्न भाषाओं के ग्रंथ पढ़ने-पढ़ाने का रिवाज़ गुरु साहिब के समय तक चल रहा प्रतीत होता है क्योंकि गुरु जी ने इस बारे में स्वयं लिखा है :

कोई पड़ता सहसाकिरता कोई पड़ै पुराना ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८७६)

गुरु साहिबान की यह बाणी व्याकरण के सूत्रों के अधीन चलती दिखाई नहीं देती, यह अलग ही अपने कायदों पर चलती नज़र आती है। 'सहसक्रिती सलोक' इस अलग व ग़ुम हो चुकी 'साध भाषा' का अति सुंदर नमूना है। पंचम सतिगुरु ने इस भाषा की भिन्नता दरसाने के लिए ही शीर्षक पर 'सहसक्रिती', 'गाथा' फरमान किया है।

'सलोक सहसक्रिती' के उच्चारण के बारे में कहा जाता है कि श्री गुरु नानक देव जी संसार के भूले-भटके लोगों का कल्याण करने हेतु विभिन्न स्थानों पर गए, जिन्हें 'उदासियां' नाम से जाना जाता है। सांसारिक जीवों का उचित मार्गदर्शन करते हुए जब वे काशी नगर पहुँचे तो क्या देखते हैं कि पंडित जगह-जगह गद्दियां लगा कर भोलेभाले लोगों को धर्म के नाम पर ठग रहे हैं। इन पंडितों में से गोपाल दत्त नामक पंडित सबसे ज़्यादा मूर्तियाँ रख कर बैठा हुआ था। गुरु साहिब बिना पाँव धोए उसकी पूजा में जा बैठे, जिस पर पंडित गोपाल दत्त और उसके साथी पंडित क्रोधवश गुरु साहिब से कहने लगे कि आपने हमारी पूजा भ्रष्ट कर दी है। गुरु जी ने उत्तर दिया कि यह पाखंड की पूजा आपका कल्याण नहीं करेगी। इस पर पंडित शांत हो गए और गुरु जी को कल्याण करने हेतु उपदेश देने के लिए कहा। गुरु साहिब ने गोपाल दत्त पंडित को संबोधित होते हुए सांसारिक जीवों के कल्याणार्थ चार सलोकों का उच्चारण किया जो 'सहसक्रिती भाषा' में उच्चारण किए गए। इसकी गवाही प्रसिद्ध 'पुरातन टीका फरीदकोटी' में से मिलती है।

पंडित गोपाल दत्त और उसके साथी पंडित, जो पंडिताई के अहंकार से भरे हुए थे, गुरु साहिब के साथ ज्ञान-चर्चा करने हेतु आए। सतिगुरु जी के आगे उनकी विद्वता टिक न सकी और गुरु जी ने उनके अहं-निवारण के लिए व संसार की भलाई हेतु चार सलोकों का उच्चारण किया। ऐसी धारणा संत किरपाल सिंघ जी सत्तो वाली गली श्री अमृतसर साहिब के 'अमीर भंडार पोथी नंबर दस' में मिलती है। गुरु जी की विद्वता को नतमस्तक होते हुए इन सलोकों को पंडित गोपाल दत्त ने 'चतुर सलोकी गीता' का नाम भी दिया है।

'सलोक सहसक्रिती महला ५' के उच्चारण से सम्बन्धित 'फरीदकोटी टीका', 'अमीर भंडार', 'ज्ञानी मनी सिंघ जी का टीका— सैद्धांतिक सटीक', 'ज्ञानी हरबंस सिंघ जी का टीका— दर्शन निरणै, 'दमदमी टकसाल का गुरबाणी पाठ दर्शन', 'गुरबाणी पाठ दर्पण' आदि सभी ग्रंथों की मिलीजुली एक ही धारणा है कि पंडित गोपाल दत्त के पोते हरिकृष्ण और हरी लाल, जो महान विद्वान थे, के पिता जब कालवश हुए तो वे बहुत व्याकुल हुए। कई तरह के ग्रंथ पढ़े मगर मन को शांति न आई। जब गुरु साहिब के उच्चारण किए हुए सलोक, जो उनके दादा ने लिख कर रखे हुए थे, पढ़े तो मन को ढारस बंध गया। पुराने बुज़ुर्गों के साथ विचार-विमर्श करने पर उन्हें पता चला कि ये सलोक श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चारण किये हुए हैं, जिनकी गद्दी पर पंचम सतिगुरु श्री अमृतसर साहिब में (रामसर साहिब नामक स्थान पर) श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ तैयार करवा रहे हैं। पता चलने पर वे श्री अमृतसर साहिब पहुँचे। गुरु साहिब के दर्शन कर अपने आने का उद्देश्य बताया। श्री गुरु नानक साहिब द्वारा उच्चरित किए सलोक उन्होंने श्री गुरु अरजन देव जी को दिए और कहा कि "जैसे श्री गुरु नानक देव जी ने हमारे बुज़ुर्गों का कल्याण किया था, उसी प्रकार आप जी हमारा कल्याण करो!" इस पर गुरु साहिब ने 'सलोक सहसक्रिती महला ५' के शीर्षकाधीन ६७ सलोकों का उच्चारण किया।

श्री गुरु नानक देव जी महाराज के काशी जाकर जन-कल्याण हेतु उच्चारण किए गए चारों सलोक और श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा उच्चारित सरसठ सलोकों की गवाही 'गुर बिलास पातशाही ६' इस प्रकार भरता है—

एक समै पंडित दो आए।
काशी ते बड गुनी सुहाए।
क्रिशन लाल हरिलालह नामा।
दोऊ भ्रात सुंदर सुख धामा॥ ५८०॥
आवत पंथ ऐस मनि धारी।
गुर नानक थे रूप मुरारी।
तासु तखति अरजन गुर सोहत।
देखि प्रताप सुने सभि मोहत॥ ५८१॥. . .
चौपई। एक समै नानक निरंकारी।
काशी गए गुरू सुखु धारी।
हम दादे सो संगति भई।
अनिक भाँत की चर्चा कई॥ ५८५॥
बहुरि उपदेश गुरू जी कीनो।
चारि सलोक मधि सुखु दीनो।
सो सलोक हैं कंठ हमारे।
सुनो प्रभू हम कहैं सुधारे॥ ५८६॥
पढ़ि पुसतक अरु संधिआ बाद।

इह बिधि भाखे रूप अनादि।

(गुर बिलास पातशाही ६, अध्याय ४, पृष्ठ ११०)

प्रसिद्ध कवि भाई संतोख सिंघ ने भी 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' की रासि ३, अंसू ४७, जिल्द ६, पृष्ठ २११९ पर इस प्रसंग के बारे में लिखा है।

उपरोक्त सारी विचार-चर्चा से सपष्ट होता है कि गुरु साहिब ने सभी सलोक अहंकारी पंडितों के अहंकार को दूर करने, उनके साथ ज्ञान-चर्चा करने और संसार के कल्याणार्थ उच्चारण किये हैं।

यहाँ पर हम श्री गुरु नानक देव जी के मुखारविंद से उच्चारण किए गए 'सहसक्रिती सलोकों' के बारे में विचार कर रहे हैं। गुरु साहिब द्वारा उच्चरित चारों सलोक श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दो-दो स्थानों पर आए हैं :—

जैसे पहला सलोक, सहसक्रिती सलोकों में भी है, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना १३५३ पर और पन्ना ४७० पर 'आसा की वार' की चौदहवीं पउड़ी (पद) से पहले है।

दूसरा सलोक पन्ना १३५३ पर भी है और पन्ना १४८ पर 'माझ की वार' की तेईसवीं पउड़ी से पहले 'महला २' के शीर्षक तले अंकित है।

सलोक तीसरा और चौथा 'सहसक्रिती' में भी है और 'आसा की वार' बाणी में पन्ना ४६९ पर बारहवीं पउड़ी के आरंभ में आए पाँच सलोकों में से तीसरा व चौथा सलोक है, जो 'महला २' शीर्षक तले दर्ज है।

सलोक सहसक्रिती महला १ ॥
पढ़ि पुस्तक संधिआ बादं ॥
सिल पूजसि बगुल समाधं ॥
मुखि झूठु बिभूखन सारं ॥
त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥
गलि माला तिलक लिलाटं ॥
दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥
जो जानसि ब्रहमं करमं ॥
सभ फोकट निसचै करमं ॥
कहु नानक निसचौ ध्यिावै ॥
बिनु सतिगुर बाट न पावै ॥ १ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३५३)

इस पूरे शबद का भावार्थ यह है कि प्रभु को पाने के लिए पाखंड की ज़रूरत नहीं है, वेदों तथा शास्त्रों का पाठ कर दूसरे लोगों पर अपनी पंडिताई का इंद्रजाल डालने वाले, झूठ को सत्य के गहनों के साथ सजा कर पेश करने वाले, माथे पर चंदन का टीका लगाकर, गले में तुलसी माला पहनकर, दो-दो धोतियां रख कर जीव सच्चा और पंडित नहीं बन सकता और न ही प्रभु को पा सकता है। जो मानव प्रभु को पाना जानता है उसके लिए ये सभी कर्म फोकट हैं। अगर श्रद्धा रख कर प्रभु-सुमिरन किया जाये तभी प्रभु की प्राप्ति होती है। यह रास्ता गुरु के

बिना नहीं मिल सकता।

निहफलं तस्य जनमस्य जावद ब्रहम न बिंदते ॥
सागरं संसारस्य गुर परसादी तरहि के ॥
करण कारण समरथु है कहु नानक बीचारि ॥
कारणु करते वसि है जिनि कल रखी धारि ॥२॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३५३)

इस सलोक का भावार्थ यह है कि जब तक मानव प्रभु के साथ गहरा रिश्ता स्थापित नहीं कर लेता तब तक उसका संसार में आना व्यर्थ है। जो जीव प्रभु का नाम-सुमिरन करता है वह संसार-समुद्र से पार हो जाता है। प्रभु सब कुछ करने के योग्य है। सारी सृष्टि उसी के वश में है। वो जैसे संसारी जीवों को नचाता है, वैसे ही ये नाचते हैं।

जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं त ब्राहमणह ॥
ख्यत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा क्रितह ॥
सरब सबदं त एक सबदं जे को जानसि भेउ ॥
नानक ता को दासु है सोई निरंजन देउ ॥३॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३५३)

भावार्थ : जाति-विभाजन के भेदभाव को खड़ा करने वाले, जाति के अनुसार ही धर्म का वर्गीकरण करते हैं, जैसे कि योगियों का धर्म ज्ञान प्राप्त करना, ब्राह्मणों का धर्म वेदों की विचार करना, क्षत्रियों का धर्म योद्धाओं वाले काम करना, शूद्रों का धर्म दूसरों की सेवा करना है। परन्तु, गुरु साहिब के अनुसार सबका श्रेष्ठ धर्म परमेश्वर का सुमिरन करना है। यह प्रत्येक मानव के लिए एक समान है, चाहे वो किसी भी जाति से सम्बन्ध रखता हो। ऐसा करने वाला जीव प्रभु का ही रूप हो जाता है।

एक क्रिस्नं त सरब देवा देव देवा त आतमह ॥
आतमं स्री बा स्वदेवस्य जे कोई जानसि भेव ॥
नानक ता को दासु है सोई निरंजन देव ॥४॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३५३)

भावार्थ : एक प्रभु ही सभी देवों, तेजस्वियों, अवतारों, पैगंबरों आदि की आत्मा है। जो जीव प्रभु के इस भेद को जान लेता है वह उसका रूप हो जाता है और परमात्मा उसका दास बन जाता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में और भी बहुत-से शबद, सलोक आए हैं, जो एक से अधिक जगह पर अलग-अलग शीर्षकाधीन कुछ लगा-मात्र तथा पाठ-भेद के साथ सुशोभित हैं। गुरु साहिब समर्थ और सर्वकला संपूर्ण थे। उन्होंने लोक-कल्याणार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में अगाध ज्ञान प्रदान कर तारनहार जहाज़ बनाया। बाणी को पढ़ने और समझने की ज़रूरत है, ताकि कलियुग के दुखों भरे समुद्र से पार निकला जा सके।

ख़बरनामा

सिक्ख विद्वान भाई हरसिमरन सिंघ के निधन पर एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी द्वारा शोक व्यक्त

श्री अमृतसर साहिब : २७ फरवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने सिक्ख विद्वान भाई हरसिमरन सिंघ के निधन पर गहरे दुख का इज़हार किया है। एडवोकेट धामी ने कहा कि भाई हरसिमरन सिंघ ने सिक्खी प्रचार के लिए उल्लेखनीय कार्य किये हैं। उनके द्वारा जहाँ विद्यार्थियों को गुरमति की शिक्षा दी गई, वहां अपनी रचनाओं के द्वारा भी सिक्खी के प्रचार-प्रसार की सेवा की गई। उन्होंने कहा कि भाई हरसिमरन सिंघ का निधन परिवार और सिक्ख समाज के लिए बड़ी हानि है। एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने भाई हरसिमरन सिंघ के परिवार के साथ हमदर्दी प्रकट करते हुए ईश्वर के समक्ष अरदास की वे बिछड़ी रूह को अपने चरणों में निवास प्रदान करें और परिवार को रज़ा में रहने का बल प्रदान करें।

मध्य प्रदेश में लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा के दौरान अमृतधारी बच्ची की दसतार व कृपाण उतरवाना निंदनीय : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब : २ मार्च : मध्य प्रदेश के जिला रतलाम में लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा के दौरान अमृतधारी सिक्ख परीक्षार्थी बच्ची की दसतार व कृपाण उतरवाए जाने के मामले पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने सख़्त एतराज़ जताया है। एडवोकेट धामी ने कहा कि सिक्ख धर्म के सिद्धांतों और रिवायतों से देश के लोग अच्छी तरह से वाकिफ हैं और सिक्ख ककारों के प्रति भी लोगों को किसी किस्म की अज्ञानता नहीं है। इसके बावजूद भी ककारों पर सवाल उठाना दुखदायी है। बार-बार सिक्ख बच्चों को परीक्षा में ककार पहनने से रोकना देश के संविधान का उल्लंघन है और सिक्खों को अपने ही देश में बेगानेपन का एहसास कराए जाने के समान है। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि चाहे परीक्षा स्टाफ की तरफ से माफी माँग ली गई है, परंतु ऐसा घटित होने से सिक्ख भावनाओं को ठेस पहुँची है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट धामी ने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा ऐसी घटनाओं के प्रति अपने जनरल इजलास के दौरान विशेष प्रस्ताव पारित कर केंद्र सरकार को भेजे जाते हैं, जिस पर कार्रवाई होनी चाहिए। उन्होंने माँग की कि केंद्र सरकार प्रत्येक राज्य सरकार को सिक्खों के ककारों व धार्मिक चिह्नों के संबंध में यह आदेश जारी करे कि किसी भी परीक्षा के दौरान सिक्ख ककारों का सम्मान बरकरार रखा जाये और अगर कोई इसका उल्लंघन करे तो सख़्त कार्रवाई अमल में लाई जाए।

पंजाब यूनिवर्सिटी में विद्यार्थियों पर लाठीचार्ज करने और उनकी दसतार उतारे जाने की एडवोकेट धामी ने की निंदा

श्री अमृतसर साहिब : ९ मार्च : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने चंडीगढ़ पुलिस द्वारा पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ के विद्यार्थियों पर लाठीचार्ज करने और उनकी दसतार उतारे जाने की सख़्त शब्दों में निंदा की है। एडवोकेट धामी ने कहा कि दसतार सिक्ख के जीवन का अहम अंग है और पुलिस प्रशासन की तरफ से बल-प्रयोग करते हुए विद्यार्थियों की दसतार उतारे जाना सिक्ख भावनाओं और सिक्खी के गौरव का निरादर है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों द्वारा शांतमयी तरीके से अपनी बात रखना उनका हक है, जिस पर किसी तरह की रोक लगाना प्रशासन की धक्केशाही है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी सिक्ख भावनाओं को लेकर लगातार माँग कर रहे थे, जिसे यूनिवर्सिटी प्रशासन की तरफ से अनसुना किया गया और पुलिस द्वारा लाठीचार्ज कर विद्यार्थियों की आवाज़ को दबाने का यत्न किया गया। एडवोकेट धामी ने कहा कि सिक्खों के साथ ऐसी घटनाओं का घटना बड़ी चिंता वाली बात है। उन्होंने कहा कि देश के विकास में बड़ा योगदान देने वाले सिक्खों की धार्मिक भावनाओं का सम्मान करना प्रशासन की भी जिम्मेदारी है। उन्होंने सिक्ख नौजवानों की दसतार उतारने वाले दोषी कर्मचारियों के ख़िलाफ़ सख़्त कार्रवाई करने की माँग करते हुए कहा कि सिक्ख की दसतार का अपमान करने वाले किसी भी दोषी को बख़्शा नहीं जाना चाहिए।

शहीद भाई तारा सिंघ जी वां की ३००वर्षीय शहीदी शताब्दी से सम्बन्धित गुरमति समारोह आयोजित

श्री अमृतसर साहिब : १४ मार्च : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा संगत के सहयोग से शहीद भाई तारा सिंघ जी वां तथा उनके साथी शहीद सिंघों के ३००वर्षीय शहीदी दिवस से सम्बन्धित विशाल गुरमति समारोह आयोजित किया गया, जिसमें सिक्ख पंथ की प्रमुख शख्सियतों सहित बड़ी संख्या में संगत ने शमूलियत की। गुरुद्वारा शहीद भाई तारा सिंघ जी वां में श्री अखंड पाठ साहिब के भोग के पश्चात् दीवान हाल में आयोजित समारोह के दौरान संबोधित करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि आज जिन सिक्ख वीरों की शहीदी शताब्दी मना रहे हैं उन्होंने सिक्खी सिद्धांतों पर पहरा देते हुए केशों के सम्मान के लिए शहादत दी। उन्होंने कहा कि इतिहास से प्रेरणा लेकर आज अपने बच्चों को साबित सूरत रखने का प्रण लेने की ज़रूरत है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सिक्ख कौम की प्रतिनिधि संस्था है, जो अपने शहीदों को याद रखते हुए धर्म के प्रचार के लिए कार्यशील है। कुछ लोगों द्वारा सोशल मीडिया पर सिक्ख संस्था के प्रति गलत प्रचार कर संगत में भ्रम पैदा किया जा रहा है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने बंदी सिंघों के हक में

आवाज़ बुलंद करते हुए कहा कि गत तीन दशक से जेलों में नज़रबंद इन सिंघों के प्रति सरकार की भेदभावपूर्ण नीति बेगानेपन का एहसास करवाने वाली है। उन्होंने कहा कि बंदी सिंघों की रिहाई के लिए आज पंथ को एकजुट होने की ज़रूरत है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने अकाली बाबा फूला सिंघ जी की शहादत को याद करते हुए उन्हें भी श्रद्धा-सुमन भेंट किए। उन्होंने समारोह में सहयोग करने के लिए संगत का धन्यवाद भी किया।

इस अवसर पर श्री अकाल तख़्त साहिब के कार्यकारी जत्थेदार ज्ञानी कुलदीप सिंघ गड़गज्ज ने कहा कि माझा क्षेत्र की धरती पर अनेक शूरवीर पैदा हुए, जिन्होंने ज़ुल्म के विरुद्ध लड़ते हुए शहादत प्राप्त की। उन्होंने कहा कि गुरु-सिद्धांत पर पहरा देते हुए शहादत प्राप्त करने वाले इन वीरों के मनाए जाने वाले दिवस नई पीढ़ी को अपनी विरासत की याद दिलाते हैं। उन्होंने कहा कि आज भी सिक्खों के सामने अनेक चुनौतियां हैं। सिक्ख विद्यार्थियों को परीक्षा के समय ककार पहनने से रोका जा रहा है, भिन्न-भिन्न प्रकार के भेदभाव हो रहे हैं।

जत्थेदार ज्ञानी कुलदीप सिंघ गड़गज्ज ने बंदी सिंघों की बात करते हुए कहा कि एक पाखंडी साध राम रहीम पर तो सरकार मेहरबान हो रही है, लेकिन अपनी बीमार माँ से मिलने की इच्छा रखने वाले भाई जगतार सिंघ हवारा को अपनी माँ से मिलने तक नहीं दिया जा रहा। बंदी सिंघों के मामले में सिक्ख भावनाओं को हमेशा अनदेखा किया गया है जो सरकार की सिक्खों के प्रति दोहरी नीति का प्रकटीकरण है। उन्होंने कहा कि हालात ऐसे हैं कि बेअदबियों को रोकने हेतु सख़्त कानून बनाने के लिए भी सिक्खों को संघर्ष करना पड़ रहा है। लंबे संघर्ष के बाद भी सरकार की ख़ामोशी बडे सवाल पैदा करती है। इस अवसर पर सिंघ साहिब ज्ञानी अमरजीत सिंघ और कथावाचक बाबा बंता सिंघ मुंडापिंड ने संगत के समक्ष ऐतिहासिक विचारों को व्यक्त किया।

समारोह के दौरान शिरोमणि अकाली दल के सीनियर नेता स. विरसा सिंघ वलटोहा, पद्मश्री बाबा सेवा सिंघ खडूर साहिब, जत्थेदार बाबा बलबीर सिंघ ९६वें करोड़ी, बाबा अवतार सिंघ सुरसिंघ, तख़्त श्री पटना साहिब के अपर मुख्य ग्रंथी ज्ञानी गुरदयाल सिंघ और भाई कंवरचड़त सिंघ ने भी संबोधित करते हुए शहीदों को सम्मान भेंट किया।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य भाई रजिंदर सिंघ महिता, भाई अमरजीत सिंघ (चावला), स. गुरबचन सिंघ करमूंवाला, स. अमरजीत सिंघ भलाईपुर, भाई अजैब सिंघ अभ्यासी, भाई मनजीत सिंघ भूरा कोहना, बाबा अवतार सिंघ धत्तल, बाबा सुखविंदर सिंघ भूरीवाले, बाबा गुरदेव सिंघ शहीदी बाग़, ओएसडी स. सतबीर सिंघ, धर्म प्रचार कमेटी के सचिव स. बलविंदर सिंघ काहलवां, निजी सचिव स. शाहबाज़ सिंघ, अपर सचिव स. बिजै सिंघ, उप सचिव स. गुरनाम सिंघ, स. हरभजन सिंघ वक्ता, स. सुखबीर सिंघ, अकाली नेता बीबी कंचनप्रीत कौर, पूर्व सचिव स. हरभजन सिंघ मनावां, स. सुखदेव सिंघ भूरा कोहना, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कानूनी सलाहकार एडवोकेट अमनबीर सिंघ सिआली, सुप्रिंटेंडेंट स. मलकीत सिंघ बहिड़वाल, मैनेजर स. रजिंदर सिंघ रूबी, बाबा जोगा सिंघ भिक्खीविंड, बाबा चढ़त सिंघ, बाबा भोला सिंघ, बाबा सज्जण सिंघ, बाबा प्रगट सिंघ, बाबा जीवा सिंघ हाँगकाँग, बाबा छिन्दा सिंघ, बाबा जुगराज सिंघ, बाबा जसकरन सिंघ आदि भी उपस्थित थे।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा

द्विवर्षीय सिक्ख धर्म-अध्ययन

पत्राचार कोर्स

पंजाबी, हिंदी और अंग्रेजी माध्यम में करवाया जाता है।

इस कोर्स में गुरबाणी, सिक्ख इतिहास, सिक्खी-सिद्धांतों और सिक्ख रहित मर्यादा के बारे में जानकारी प्रदान की जाती है। विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम से संबंधित अध्ययन-सामग्री निःशुल्क उपलब्ध कराई जाती है।

- इस कोर्स में, किसी भी धर्म या क्षेत्र से संबंधित कोई भी व्यक्ति, जिसकी आयु 16 वर्ष से अधिक हो, दाखिला लेकर दो वर्ष में सिक्ख धर्म से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकता है।
- इस कोर्स के लिए दाखिला फीस भारतीय नागरिकों हेतु मात्र 100/- रुपये है, जबकि विदेशी नागरिकों के लिए यह 30 अमेरिकन डॉलर, 20 पाउंड (UK) अथवा भारतीय मुद्रा में 1500/- रुपये निर्धारित है। दाखिला फीस 'सचिव, धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब' के नाम पर बैंक ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर के माध्यम से अथवा 'धार्मिक परीक्षा अनुभाग' में नकद जमा करवाई जा सकती है। इस संबंध में, धर्म प्रचार कमेटी के प्रचारक साहिबान अथवा सिक्ख मिशनों के प्रभारीगण के साथ भी संपर्क किया जा सकता है।
- इस कोर्स में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को क्रमशः 5100/, 4100/- तथा 3100/- रुपये की राशि देकर सम्मानित किया जाता है। इसके अतिरिक्त, 80% से अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को भी मानदेय के रूप में 1100/- रुपये प्रदान किए जाते हैं।

पत्राचार हेतु पता

प्रभारी, धार्मिक परीक्षा अनुभाग,

धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब।

फ़ोन : 0183-2553956-59, एक्सटेंशन : 305, फैक्स : 0183-2553919

ई-मेल : religiousexam@gmail.com वेबसाइट : www.sgpc.net

समय : प्रातः 9.30 बजे से सायं 4.30 बजे तक

धार्मिक परीक्षा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी की ओर से स्कूल-कॉलेज स्तर के विद्यार्थियों हेतु 'धार्मिक परीक्षा' आयोजित कर वजीफा प्रदान किया जाता है। यह परीक्षा प्रत्येक वर्ष दर्जा प्रथम व द्वितीय हेतु नवंबर माह में तथा दर्जा तृतीय व चतुर्थ के लिए फरवरी माह में आयोजित की जाती है। 'धार्मिक परीक्षा' में भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी या स्कूल-कॉलेज के प्रिंसिपल साहिबान 'सचिव, धर्म प्रचार कमेटी, शि.गु.प्र. कमेटी, श्री अमृतसर साहिब के साथ लिखित रूप में संपर्क करें!

Registered with PRGI at No. PUNHIN/2007/21665

Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2026-28 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB//R-001/2026-28

GURMAT GYAN April 2026

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

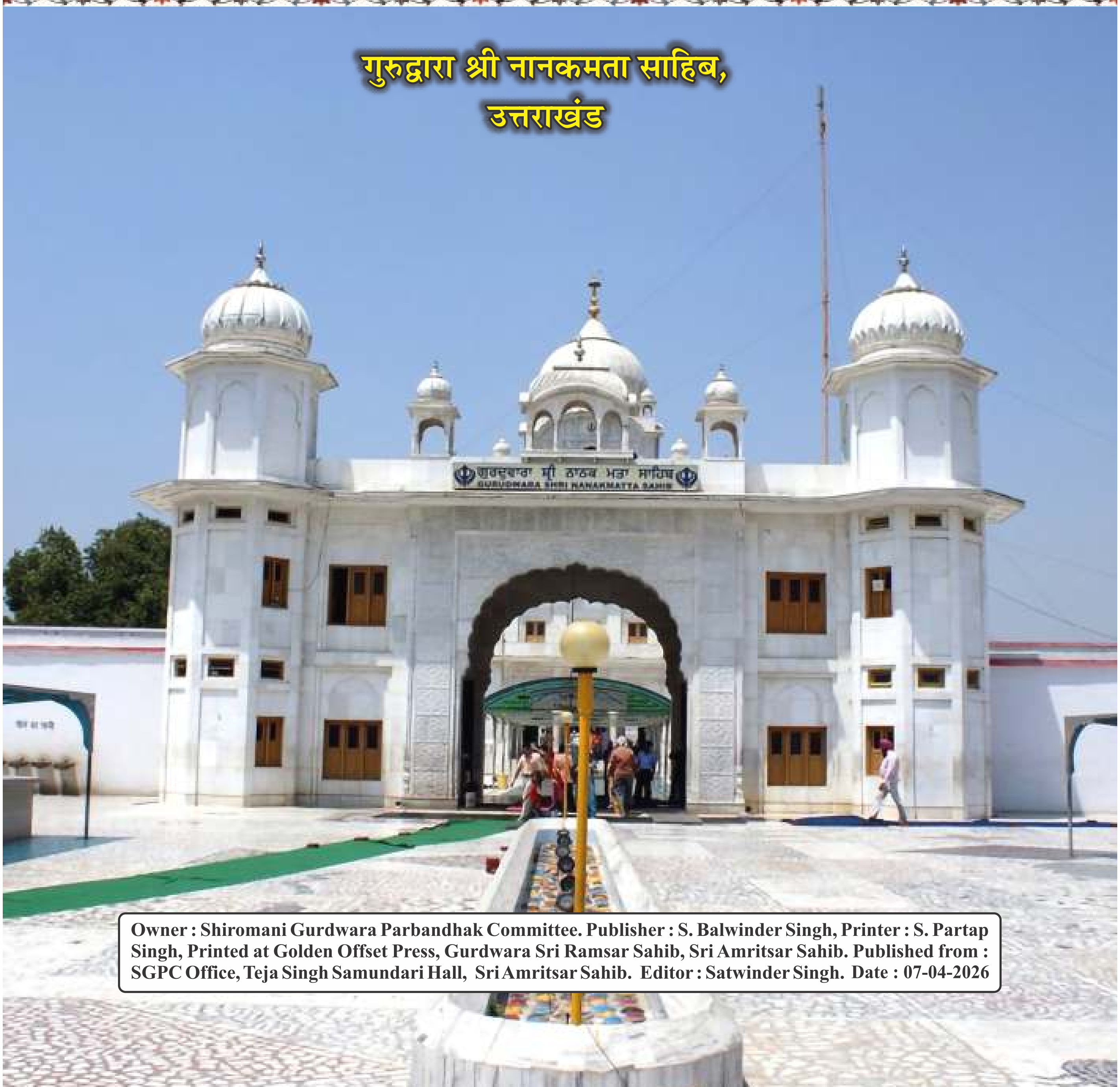

गुरुद्वारा श्री नानकमता साहिब,
उत्तराखंड

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher : S. Balwinder Singh, Printer : S. Partap Singh, Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from : SGPC Office, Teja Singh Samundari Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh. Date : 07-04-2026